साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : व्यय अधिक, यात्रा छोड़ दें, कारोबारी हालात अनुकूल चलेंगे, आय में वृद्धि, व्यय यथार्थ, यात्रा लाभप्रद, घरेलू पक्ष से चिन्ता बनेगी, हालात कुछ संघर्षमय, परन्तु कामों में सफलता मिल जाया करेगी।

वृष : मिले जुले हालात चलेंगे, व्यय यथार्थ कारोबार बढ़ेगा, कामकाज में रुचि अधिक एवं लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, यात्रा सफल, सेहत नरम, व्यय अधिक, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा भी हो सकती है।

मिथुन : लाभ खर्च बराबर, नातेदारों से मेल मिलाप, खर्चे ज्यादा परन्तु लाभ भी समय पर मिल जाया करेगा, कामों में दिलचस्पी बढ़ेगी, यात्रा सावधानी से करें, आय आशा से अधिक, पर मिलेगी देर से।

कर्क : सेहत कुछ खराब, परिवार से सुख, आय व्यय समान हो, नातेदारों से मेलजोल, अकारण वैर-विरोध से परेशानी, हालात नियंत्रण में रहेंगे, कारोबार अच्छा चलेगा, काम समय पर बनते रहेंगे।

सिंह : अजनबी लोगों से बचें, मित्र सहयोग देंगे, दौड़धूप अधिक एवं सफल रहेगी, यात्रा की आशा है, लाभ अच्छा, चिन्ता व्यर्थ की ही रहेगी, नया काम न करें, स्थायी काम धन्धों में सुधार होगा, घरेलू हालात सुधरेंगे।

कन्या : व्यर्थ का झंझट या क्लेश का वातावरण रहेगा, हालात तो कुछ सुधरेंगे परन्तु कोई न कोई चिन्ता बनी ही रहेगी, भाइयों से सुख सहयोग, काम भी बन जायेंगे, सेहत को संभाले रखें अन्य हालात सुधरेंगे,

तुला : सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, काम बन जायेंगे, यात्रा सफल, आय में वृद्धि, कामों में भी सफलता मिलती रहेगी, मन परेशान बिना कारण ही रहेगा, भाइयों से मेल जोल व सहयोग, यात्रा में सुख।

वृश्चिक : बिगड़े काम बनेंगे, खर्चा भी बढ़ेगा, शुभ अशुभ मिश्रिफल मिलेंगे, व्यापार में सुधार पर धन प्राप्ति देर से या आशा से कम, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी, व्यापार मध्यम।

धनु : लाभ के साथ-साथ खर्चा भी काफी होगा, आर्थिक क्षेत्र में सुधार होने लगेगा, शुभ कामों पर व्यय, परिश्रम अधिक एवं सफल भी रहेगा, शत्रु या विरोधी पक्ष से बचें, आय में वृद्धि परन्तु देर से मिलेगी।

मकर : व्यर्थ के झंझटों से मन परेशान, यात्रा में कष्ट, हालात अनुकूल ही चलेंगे, यात्रा लाभप्रद, परेशानी अकारण ही रहेगी, कामकाज, ठीक चलेगा, दौड़ धूप सफल रहेगी, साहस बढ़ेगा, आर्थिक दशा सुधरेगी।

कुम्भ : कोई विशेष समाचार मिलेगा, व्यय अधिक, यात्रा के लिए दिन ठीक नहीं, व्यर्थ का क्लेश या परेशानी, कारोबार अच्छा परन्तु आर्थिक लाभ आशा से कम, लाभ खर्च बराबर, सेहत नरम, चिन्ता रहेगी।

मीन : लाभ खर्च बराबर, यात्रा सावधानी से करें, आर्थिक लाभ अच्छा, कारोबार भी बढ़ेगा, परन्तु घरेलू समस्याओं से परेशानी रहा करेगी, व्यय अधिक, कोई अप्रिय घटना हो सकती है।

आपके पत्र

सम्पादक जी दीवाना का छठा अंक प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर दृष्टि पड़ते ही हँसी का फव्वारा छूट पड़ा। सभी स्तम्भ अच्छे लगे।

'दीवाना फ्रैंडस क्लब' में अपना फोटो छपा देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरी ओर से दीवाना के लिए शुभकामनायें।

प्रदीप कुमार—गया

दीवाना का अंक ५ बहुत दिनों बाद मिला इस अंक में 'गुलामी का सुख', 'मोटू-पतलू', 'सुपर गर्ल', बेरोजगारी गाइड' आदि लेख हमें बहुत अच्छे लगे।

लखमी चन्द माधवानी—मैहर

दीवाना का नया अंक ४ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखकर खुशी का ठिकाना न रहा। कृपया आप यह बताने का कष्ट करें कि हमें आपके यहाँ क्यों और कैसे में प्रश्न भेजे हुए छः महीने हो गये उत्तर नहीं मिला क्यों? **बलीराम धर्मानी—रायपुर**

वैसा ही प्रश्न किसी अन्य पाठक ने आपसे पहले पूछा होगा और उसका उत्तर छप चुका होगा। —सं०

दीवाना का ताजा व नया अंक ६ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखकर जो हंसी छूटी तो फिर घर पहुंच कर ही रुकी। सिलबिल-पिलपिल तथा मोटू-पतलू का जवाब नहीं। सम्पादक जी से मेरा यह अनुरोध है की आप मोटू-पतलू को रंगीन कर दें—

मुरलीधर बजाज—बिलासपुर (म. प्र.)

दीवाना का नया अंक नं० ५ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखते ही हसी के फव्वारे छूट पड़े। इस अंक में, मोटू-पतलू, फैंटम अच्छे रहे। लेकिन इसमें 'पाक-क्रिकेट टीम क्यों हारी' का दीवाना विश्लेषण पढ़ा, पढ़कर हंसी के मारे पेट में बल पड़ गये। अनहोनी ने लेखिका संगीता को मेरी तरफ से बधाई। अगर मैं तस्वीर भेजूं तो कितने समय के बाद प्रकाशित होगी?

रविन्द्र नाथ—सरीन (बन्टी)

नम्बर आने पर तुरन्त छप जाएगी। —सं०

दीवाना का अंक ५ पढ़ा। कच्ची दीवार वाला पुल देखकर रोंगटे खड़े हो गये कि अभी उस पर से गुजरती हुई कार गिरेगी। धारावाहिक कहानी 'अनहोनी' लेखिका 'संगीता' बहुत बढ़िया है। भविष्य में उम्मीद है आप इससे भी अच्छी-अच्छी कहानियाँ छापेंगे।

पंचतंत्र, पसन्द आया। वैसे 'दीवाना' को सभी पत्रिकाओं का राजा कहें तो गलत नहीं होगा। **प्रदोष दयाल माथुर—दिल्ली**

दीवाना का अंक ५ प्राप्त हुआ। मुख-पृष्ठ में विशेष आकर्षण था। 'पाक-क्रिकेट टीम क्यों हारी' पढ़कर इतनी जोर से हंसी आयी कि पिताजी की डांट खानी पड़ी।

काका के कारतूस, मोटू-पतलू, सिल-बिल-पिलपिल व बेरोजगारी गाइड पसन्द आए। सुपरगर्ल ने विशेष रूप से आकर्षित किया। **उमेश ज्ञानचंदानी 'प्रेमी'—नागपुर**

मैं आपकी पत्रिका दीवाना का एक दीवाना अर्ज करना चाहता हूँ कि कृपया मिलबिल-पिलपिल स्तम्भ की पृष्ठ संख्या चार से बढ़ाकर आठ पृष्ठ कर दें। चिल्ली लीला दीवाना पत्रिका की शान है। दीवानी चिपकियाँ आजकल केवल एक या दो ही आती हैं जबकि इसका एक पूरा पृष्ठ होना चाहिए जिससे हमें पूरे सप्ताह का मसाला मिल सके। **रामेन्द्र सिंह—शिमला**

आपके सारे सुझाव बहुत अच्छे हैं, धन्यवाद। लेकिन जगह की कमी से सिल-बिल के पेज बढ़ाना असम्भव है। —सं०

मुख पृष्ठ पर

गधा पाला चिल्ली ने
चलता सीधी-चाल,
आ जाये कोई राह में
नहीं करता कुछ ख्याल।
नहीं करता कुछ ख्याल
जायेगा बिल्कुल सीधा,
कर गया टुकड़े कार के
स्तब्ध रह गया घसीटा॥

दीवाना

अंक : ६ वर्ष : १६

१५ मई १९८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ वार्षिक: ४८ द्विवार्षिक: ९५

शिक्षा तो फैली लेकिन दहेज ?

पहले यह ख्याल था कि शिक्षा फैलेगी तो दहेज की कुप्रथा लोग स्वयं ही छोड़ देंगे। शिक्षा धीरे-धीरे फैली और फैलती जा रही है लेकिन क्या दहेज उसी अनुपात में कम हुआ। वास्तव में समाज में आज हालत क्या है पढ़िये। पढ़ कर आप रोयेंगे भी हंसेंगे भी।

ग्रनपढ़ का ग्रनपढ़ लड़का बाप का कहना मानना ग्रपना फर्ज समझता है ग्रतः बाप को दहेज मांगने की पूरी छूट देता है।
शिक्षित लड़का जानता हैं कि दहेज मांगने का बाप को हक नहीं है। लेकिन वह बाप को दहेज मांगने की पूरी छूट देता है क्योंकि वह जानता है कि उसका बाप ससुराल वालों की ज्यादा अच्छी तरह खाल उतार सकता है।
ग्रनपढ़ कहीं दहेज तय होने पर भी जन्म कुंडली न मिले तो शादी तोड़ देता है क्योंकि ग्रज्ञान वश वह ग्रहों के चक्कर को सच मानता है।
शिक्षित जानता है कि जन्म पत्री बकवास है। मोटी दहेज तय होने पर वह पंडित को दस का नोट पकड़ा कर पत्री मिलवा देता है। यानि दहेज के लिये वह अपनी बरसों की शिक्षा को दस रुपये में बेच देता है।
अनपढ़ दूल्हा केवल पहले की तय की हुयो दहेज को ग्रपना हक समझता है और रकम मिलने पर बाप के इशारे पर फेरे डाल लेता है।
शिक्षित दूल्हा जानता है कि दहेज वगैरह सब साफ-साफ ब्लैक मेल है। बाप जो नकद ले चुका वह तो ले चुका, क्यों न वह खुद भी कुछ कर दिखाये ब्लैकमेल के क्षेत्र में। बाप ससुर की कमीज उतार ही चुका है तो वह भी धोती उतरवा ले तो क्या फर्क पड़ता है। ग्रतः फेरों से पहले वह एक नये 'ग्राइटम जैसे स्कूटर वगैरह की मांग करता है।
एक बार शादी होने पर ग्रनपढ़, बीबी की पूरी जिम्मेवारी संभालता है। कभी बहुत बड़ी मुसीबत ग्रान फंसे तो ससुर के चरणों में पगड़ी डाल मदद मांगता है।
क्षिक्षित व्यक्तिः ससुर को सोने का अंडा देने वाली मुर्गी समझता है। शादी के बाद भी वह बिजनैस में घाटा वगैरह का बहाना बना लोन के नाम से ससुर की उल्टे उस्तरे से मुंडाई करता ही रहता है जब तक ससुर हार्ट ग्रटैक से मर न जाये।
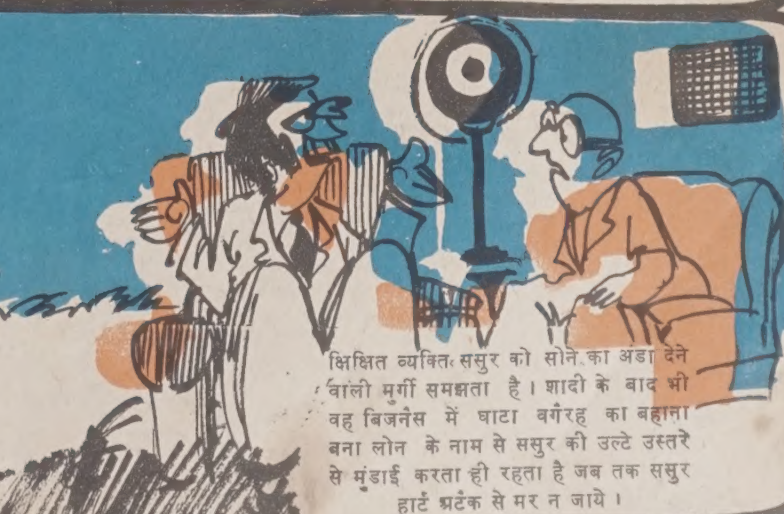
बजरंग शर्मा—श्री गंगा नगर : चाचा जी, लोग शादी क्यों करते हैं ?

उ० : बैंड वालों और परिवार नियोजन वालों को धंधे से लगाये रखने के लिए।

मुशर्रफ अली, पौड़ी—गढ़वाल : चाचा जी संसार में कौन सबसे सुखी तथा कौन सबसे दुखी है ?

उ० : वह जो दीवाना पढ़ता है और वह जो दीवाना नहीं पढ़ता।

प्रहलाद जसवानी कृष्णा कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, आज का इंसान पैसे के पीछे पागल क्यों है ?

उ० : क्योंकि आज के पागल के पीछे पैसा है। अगर विश्वास न हो तो किसी पागल की पिछली हिस्ट्री खोज कर देख लीजिए।

बीर भान बिट्टू—मोगा : दीवाना का प्रकाशन कितने साल पहले शुरू हुआ ? और आप पाठकों के प्रश्नों के उत्तर कब से दे रहे हैं ?

उ० : १६ साल पहले प्रकाशन हुआ। तभी से हम पाठकों के प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं।

बाल किशन—गोरखपुर : चाचा जी, सूर्य ग्रहण के अवसर पर आप कौन से बिल में घुसे थे ?

उ : इस प्रश्न का उत्तर देकर हम आप के झांसे में नहीं आ सकते। एक चूहा दूसरे चूहे को अपना बिल इतनी आसानी से नहीं बताता।

मोहन लाल शर्मा—करनाल : मैं आपसे कुछ प्राईवेट बातें करना चाहता हूं। क्या आप अपने मिलने का पता बतायेंगे ?

उ० : पता यही है जिस पर आपने पत्र डाला है। आपस की बातों से अधिक प्राईवेट बातें भी कोई हो सकती हैं क्या ?

अंजनी कुमार सिंह आशिफ—पटना : चाचा जी, क्या आपने प्रेम विवाह किया है ?

उ० : विवाह किया यह क्या कम है। प्रेम-विवाह या बिना प्रेम विवाह से क्या फर्क पड़ता है ? छुरी खरबूजे पर गिरे, या खरबूजा छुरी पर। बात तो एक ही है।

फुलबिन्दर सिंह, गुरप्रीत सिंह—पटियाला : मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता क्या करूं ?

उ० : दीवाना के अंक ज्यादा ध्यान से पढ़ा कीजिए। फिर आपको जागते में तो क्या सोने में भी पढ़ने की आदत पड़ जायेगी।

कृपा शंकर भाटिया—जैसलमेर : यदि राह चलते यमराज से भेंट हो जाये तो उससे क्या पूछना चाहिए।

उ० : यह बात आप हमसे पूछ रहे हैं ?

रवीन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : चाचा जी, अगर इंसान के पैरों की जगह पहिये होते, तो क्या होता ?

उ० : वही होता, जो अब हो रहा है। पैर होते हुए भी इंसान चल नहीं रहा है, लुढ़क रहा है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी, हरिद्वार : चाचा जी, मैं बिना मरे स्वर्ग देखना चाहता हूं। कोई सरल सा तरीका बताइये।

उ० : दीवाना का हर अंक स्वर्ग का आनन्द देता है। वैसे क्या आपको ऐसा लग रहा है कि मरने के बाद आपके लिए स्वर्ग के दरवाजे पर 'नो एडमीशन' का बोर्ड लगा होगा।

उमेश ज्ञानचंदानी, नागपुर : राज नारायण की जो हालत हुई है, उसे देखकर या सुन कर आपने क्या सबक लिया है ?

उ० : बेवकूफ दोस्त से अक्लमन्द दुश्मन अधिक अच्छा होता है।

लोकेश कुमार द्विवेदी, 'राजू' फतेहपुर : संसार की कोई भी वस्तु जलती है तो शेष राख बचती है। दिल जलता है तो क्या बचता है ?

उ० : दुनिया की दिल्लगी का सामान।

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्केट : शादी के बाद के चक्करों में इंसान खुद को क्यों भूल जाता है ?

उ० : क्योंकि 'नून तेल लकड़ी' का सवाल घनचक्कर बना देता है।

एस० एम० आलमगीर, हजारी बाग : चाचा जी, क्या आप बता सकते हैं कि इंसान किस चीज से बिगड़ता है।

उ० : पैसे से बनता है और पैसे ही से बिगड़ता है।

बजरंग शर्मा, श्री गंगानगर : प्यार का रंग कैसा होता है ?

उ० : प्यार में आंखें फटें तो सुनहरी, कपड़े फटें तो गुलाबी जूते फटें तो काला और सर फटें तो लाल।

विनोद पुरी, 'रंजू,' लुधियाना : क्या यह सच है कि टूटी किस्मत पैसे से जोड़ी जाती हैं ?

उ० : जहां पैसा जुड़ जाता है, वहां किस्मत जुड़ती है।

प्रदीप कुमार, वाराणसी : चाचा जी, आप हमारे प्रश्नों के उत्तर कहां से खोज कर लाते हैं ?

उ० : वे प्रश्नों में ही छुपे होते हैं।

दलीप कुमार गुप्ता, अजमेर : क्या आपका कभी किसी अपने जैसे हाजिरजवाब से पाला पड़ा है ?

उ० : जी हां, हमारे पड़ौस में एक शर्मा जी रहते हैं। पिछले दिनों उन्हें नौकरी से

जवाब मिला तो वह बेचारे बहुत सादा भोजन खाने लगे। दूध की तो बात छोड़िये, चाय भी पीते तो बिना मीठे की। एक बार वह ऐसे ही रूखी-सूखी खा रहे थे कि उन्हें रसोई घर से स्वादिष्ट पकवानों की सुगंध आई। रसोई घर में जाकर देखा तो पता चला उन का रसोईया बड़ा पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन तैयार कर रहा है। शर्मा जी ने कहा, 'यह क्या हो रहा है ? मुझे नौकरी से जवाब मिल चुका है और तू पहले जैसा ही स्वादिष्ट भोजन बना रहा है ?' इस पर हाजिर जवाब नौकर ने उत्तर दिया, 'हजूर, आपको नौकरी से जवाब मिला है, मुझे तो नहीं मिला।'

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना - आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०
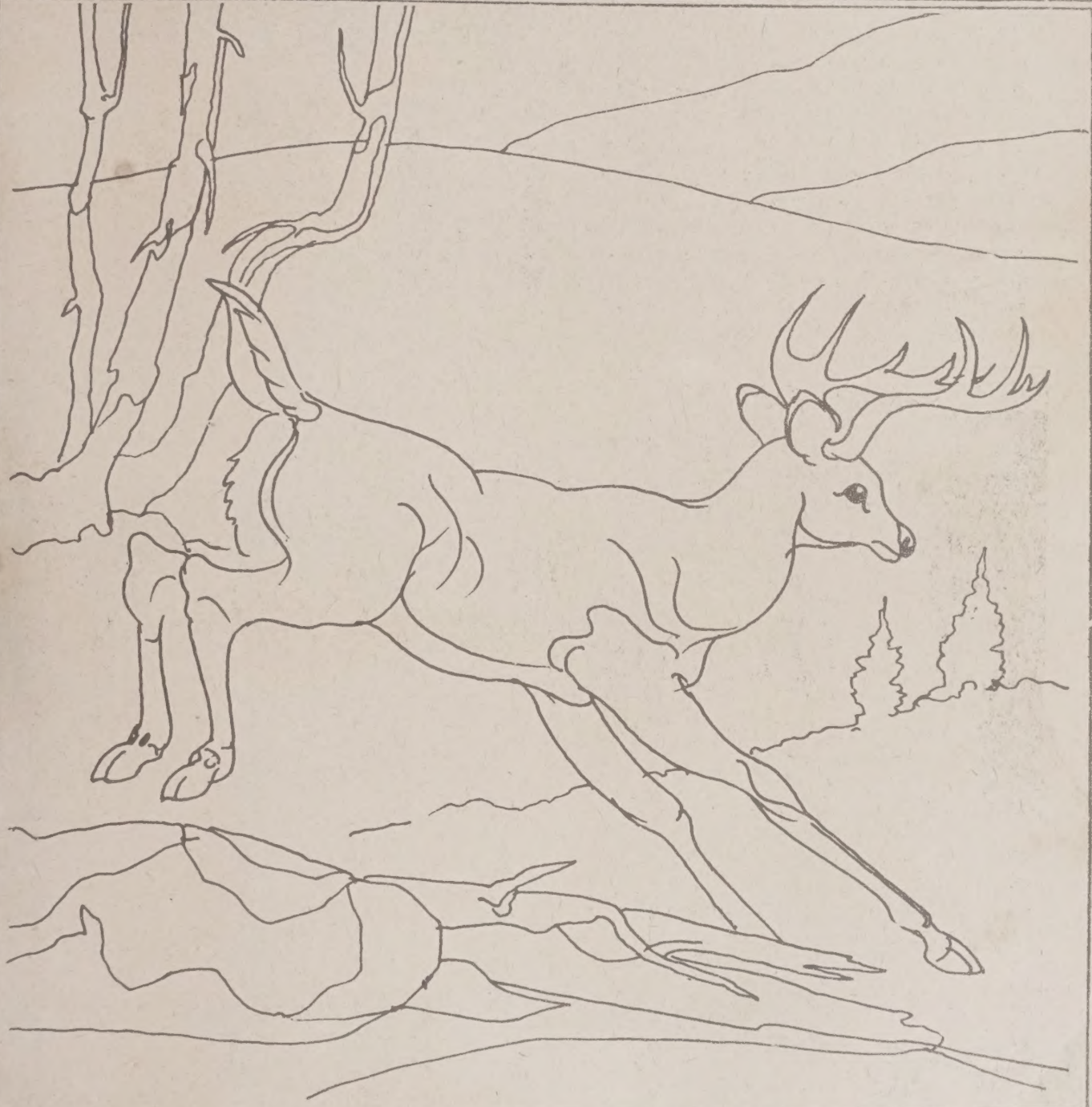
केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... **उम्र** ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

CONTEST NO 14

होटल चलाने में लाखों रुपये का आदान प्रदान होता है। होटल में फिल्मों की शूटिंग होती है। फिल्म स्टारों से मुलाकात होती है। बड़े-बड़े लोग वहां आकर ठहरते हैं। चोटी के नेताओं से मेल-मिलाप बढ़ता है। यही वह ग्लैमर था जिसने पिछले दिनों मोटू पतलू की आँखें चका-चौंध कर दी थीं और उन्होंने एक होटल किराये पर लेकर उसे ग्रीन होटल के नाम से चलाना शुरू कर दिया था।

मगर इस ग्लैमर से अब तक मोटू-पतलू का एक भी सपना पूरा नहीं हुआ था। दूसरों के तवे पर अपनी रोटियां सेंकने वाला घसीटा राम होटल में बेटर है और इस मौके की तलाश में है कि कब कोई मोटी मुर्गी फंसे और वह अपने वारे-न्यारे कर ले। लीजिये, वह मौका आ ही गया है। ग्रीन स्टार होटल में एक ऐसी औरत आ कर ठहरी है जिसके पास बेशुमार दौलत है। लम्बा चौड़ा कारोबार है, और जिसके आगे-पीछे कोई नहीं।

मैं आप से बहुत खुश हूं। आपका होटल बहुत शानदार है। जी चाहता है इसे ही अपना घर बना लूं और यहां से कभी न जाऊं।

इसे अपना घर ही समझिये। सारी उम्र यहां रहिये। मेहमानों को हर प्रकार खुश रखना हमारा पहला असूल है।

मेरी बहुत बड़ी सम्पत्ति है। लम्बा चौड़ा कारोबार है। कपड़े की मिलें हैं, चाय के बाग हैं। पर मेरे बाद इन सबका कोई वारिस नहीं। मैं हूं और मेरे बाद मेरी दौलत का कोई मालिक नहीं। तुम मुझे बहुत अच्छे लगे हो, इसलिये मैंने फैसला किया है कि मैं आपको गोद ले लूं।

आप क···क···क्या कह रही हैं? म···म···मैं इस काबिल नहीं।

देखिये, मेरी बात सुनिये। मैं मिसेज पालकीवाला का बिजनेस मैनेजर और प्राईवेट सैक्रेटरी हूं। इनके दिमाग में कुछ गड़बड़ है। जिससे मिलती हैं, उसी के सामने गोद लेने का प्रस्ताव रख देती हैं। आप इसे सच मत समझिये।

और लम्बी चौड़ी सम्पत्ति, फैला हुआ बिजनेस कपड़े की मिलें चाय के बाग?

यह सब बातें सच्ची हैं, पर गोद लेने की बात एक बीमारी बन चुकी है।

क्या बाल हैं । सर पर जैसे घास उगी है । जी चाहता है, इसे गोद ले लूं ।
हां हां जरूर गोद ले लेना मिसेज पालकीवाला । पहले जरा डाक्टर के पास चलिये ।

डाक्टर झटका के क्लीनिक में पहुंच कर ।
क्या आँखें हैं ।
क्या नाक है ! लगता है, तुम्हें खुद अपने हाथ से बनाया है भगवान ने !

भगवान ने खुद बनाया है या ठेके पर घड़वाया है इससे क्या फर्क पड़ता है, आप यह बताइये कि बीमारी क्या है आपको ?
मैं तुम्हें गोद लेना चाहती हूँ ।
यही बीमारी है इनकी । जिससे भी मिलती हैं, उसी से कहने लगती हैं, मैं तुम्हें गोद लेना चाहती हूं ।

आप इनके दिमाग का चैकअप कर लीजिये । लगता है दिमाग में कहीं गड़बड़ है ।
यह हालत कब से है इनकी ?
पिछले कुछ महीनों से । मिसेज पालकीवाला के पास इतनी दौलत है जिसका हिसाब नहीं । सूरत में कपड़े की मिलें हैं । बम्बई में मोटर पार्ट्स के कारखाने हैं । दार्जिलिंग में चाय के बाग हैं । पर इनका अपना दूर का या पास का कोई रिश्तेदार नहीं ।

मुझे यह अपना सब कुछ मानती हैं और मैं भी सगे सम्बंधियों से बढ़ कर इनकी सेवा कर रहा हूं । अपनी सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा भाग एक ट्रस्ट बनाकर इन्होंने मुझे सौंपा हुआ है । यह मुझ पर इतना विश्वास करती हैं कि अपने बाद यह अपना सब कुछ मेरे हवाले कर देंगी ।
पर अब पिछले कुछ महिनों से इन पर यह दौरा सा पड़ने लगा है कि जिससे भी मिलती हैं, उसी को गोद लेने की बात कहने लगती हैं । मैं एक वफादार और आज्ञाकारी सेवक की तरह इनकी सेवा कर रहा हूं । मैंने देश के बड़े-बड़े डाक्टरों से इनका इलाज करवाया है, पर अब तक कोई लाभ नहीं हुआ । इलाज के सिलसिले में ही मैं मिसेज पालकीवाला को यहां लाया हूँ और आपके होटल में ठहरा हूं ।
वाह वाह, क्या नाक है, और नाक के नीचे क्या मूछें हैं । तुम मुझे बहुत भले लगे हो बेटा । जी चाहता है, मैं तुम्हें गोद ले लूं बेटा ।
गोद ले लूं बेटा ! मैं इनका बेटा हूं !! माता जी मुझे गोद लेंगी !
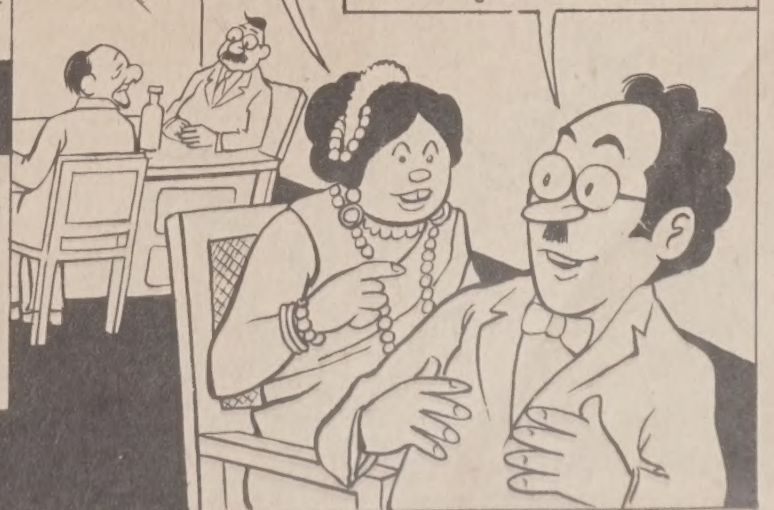
मेरे आगे पीछे कोई नहीं। कौन है जो मेरे बाद इतनी दौलत का मालिक बनेगा। सोचती हूं, तुम्हें गोद ले लूं बेटा।
सोचना क्या है? अभी गोद ले लीजिये माता जी!
लीजिये, मैं आ गया आपकी गोद में। यह रसम पूरी हो गई। चेलाराम चूहे, तू फोटो खींच ले मेरी और माता जी की।
फोटो क्या खिचवायेगा, अपनी खाल खिंचवा कर भुस भरवायेगा इसमें।
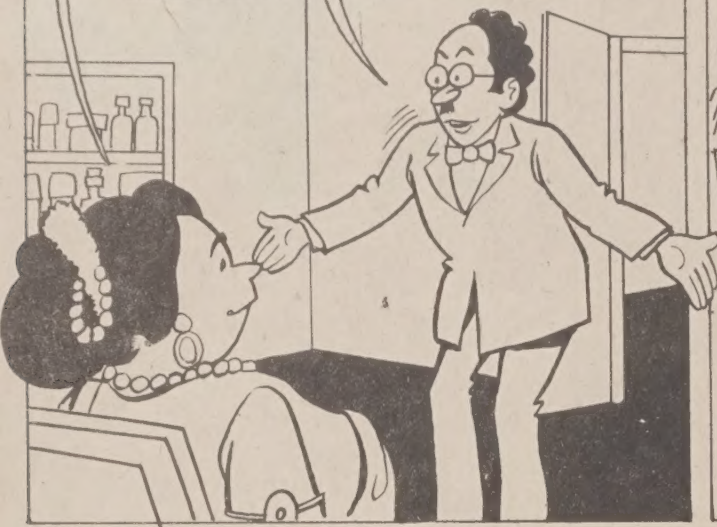
अरे मिसेज पालकोवाला को तो गोद लेने की बात कहने की बीमारी है।
औरयह वास्तव में गोद में जा बैठा है।

तुम सब मुझसे जलते हो। तुमने कभी मेरा भला नहीं चाहा। अब मुझे अमीर बनते देख कर तुम्हारी छाती फटी जा रही है। माता जी ने गोद लिया है। मैं गोद गया हूं। तुम्हारे मरे मुर्दे के जनाजे क्यों उठ रहे हैं?
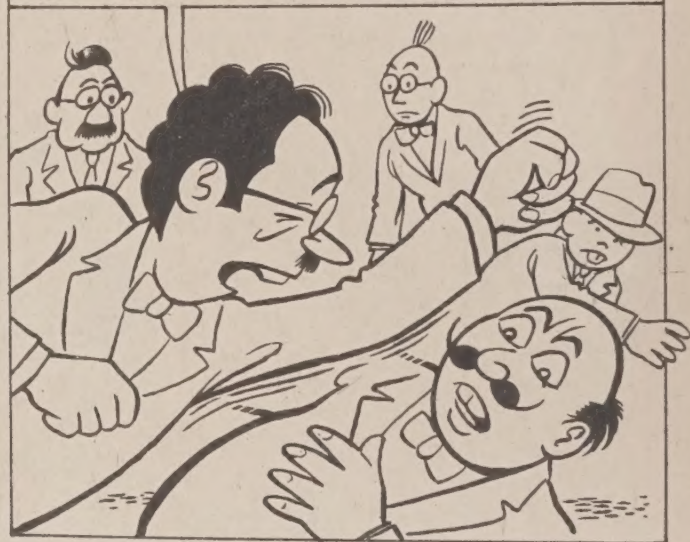
नाराज होने की बात नहीं। इन्हें वाकई हर किसी से यह कहने की आदत है।
अब मुझे गोद ले लिया है, तो समझो यह आदत समाप्त हुई।
हां, वास्तव में मैंने इसे गोद ले लिया है।

अब फरमाइये आपको कोई एतराज है बिजनस मैनेजर साहब?
मुझे क्या एतराज हो सकता है! जैसे आपकी और मिसेज पालकीवाला की मरजी। पहले मैं इनकी सेवा करता था, अब आपकी भी किया करूंगा।

गोद लेने की रसम पूरी करने के लिये लिखत-पढ़त जरूरी होती है। मैं वकील को बुला लूं माता जी?
हां बुला लो। मैं कानूनी तौर पर रजिस्ट्री करवा कर तुम्हें गोद लेने की सरकारी रसम पूरी कर दूंगी। और वकील से तुम्हारे नाम अपनी नई वसीयत भी लिखवा दूंगी।

चला दिया इसने अपना चक्कर । कहता था अब कभी हेरा फेरी नहीं करूँगा ।

पूरा चलता पुर्जा है । हेरा फेरी तो इसकी घुट्टी में पड़ी है ।

इस बार तो लगता है, इसने वास्तव में दाव मार लिया ।

घसीटा राम ने तुरंत ही वकील बुला लिया । वकील ने गोद लेने के कागजात तैयार किये । गवाहों में घसीटा राम की ओर से मोटू-पतलू, डा० झटका और चेला राम ने हस्ताक्षर किये । मिसिज पालकीवाला की ओर से उसके सैक्रेट्री ने गवाही दी । और मिसिज पालकीवाला ने घसीटाराम को कानूनी तौर पर गोद ले लिया । इसके बाद मिसिज पालकीवाला ने अपनी नई वसीयत लिखवाई जिसमें कहा गया था कि मिसिज पालकीवाला की मौत के बाद उनकी तमाम सम्पत्ति और मिलों कारखानों का मालिक घसीटा राम होगा। इससे पहले जो भी वसीयत की गई है वह कैंसिल समझी जाएगी । और मिसिज पालकीवाला के सैक्रेट्री और मैनेजर को घसीटा राम के आदेशों का पालन करना होगा ।

मैं आपको इस शुभ अवसर पर बधाई देता हूं छोटे मालिक । आज से आपका हर हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है ।

देखते ही देखते घसीटा राम की हालत बदल गई । पलक झपकते ही सड़क का आदमी आसमान पर पहुँच गया था । जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे उसने आदमी को आदमी समझना छोड़ दिया था ।

कैसे दिन फिरे हैं इस फूटी किस्मत वाले के। जिसके मुंह पर मक्खियां भिनभिना भी अपनी बेइज्जती समझती थीं, वह आज आसमान का सितारा बन कर चमक रहा है।
धुन का पक्का निकला। बड़ा आदमी बनना चाहता था, तो बन कर दिखा दिया।
चलो हममें से एक के दिन तो फिरे।

यह क्या मिस्कोट कर रहे हो मेरे खिलाफ?
हम तो तुम्हारी तारीफ कर रहे थे भाई।
भाई कह रहे हो मुझे! दो टके के आदमी का भाई और करोड़पति घसीटा राम! जिसके पास दौलत आ जाये, सड़क चलते कितने ही आदमी उसके रिश्तेदार बन जाते हैं।

दौलत का इतना गरूर! कल तक तो तुम हमारे साथी थे।
'तुम' नहीं आप कहो, सेठ घसीटा राम पालकीवाला से तमीज से बोलो। यस सर, आलराईट सर के इलावा में तुम्हारे मुंह से कुछ सुनना नहीं चाहता।
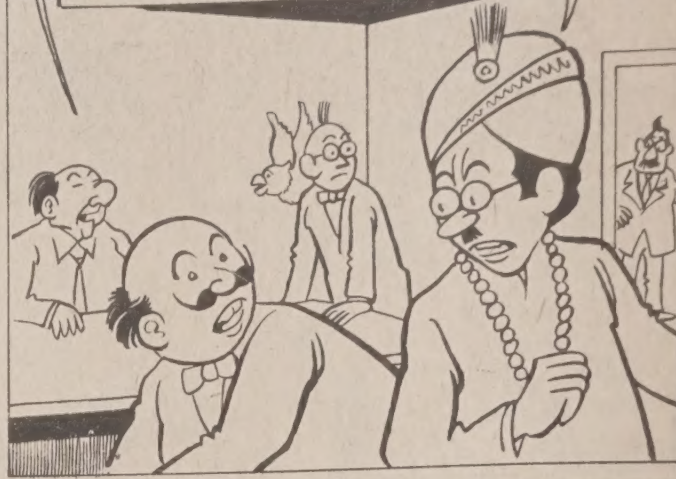
मैं अब भी कहता हूं। तुम उल्लू बन रहे हो। मिसिज पालकीवाला के जीते जी तुम अपने को करोड़पति सेठ कह रहे हो।
यह अकलमन्द ठीक कह रहा है। जब तक मिसिज पालकीवाला जीवित हैं, सब कुछ उनका है।
फिर क्या हुआ, आखिर वह कभी तो मरेंगी ही।

इससे पहले यह भी तो हो सकता है कि तुम मर जाओ। या मिसिज पालकीवाला किसी और को भी गोद ले लें।
क्या बक रहे हो। मैं मर जाऊंगा? और मिसिज पालकीवाला नहीं मरेंगी? क्यों नहीं मरेंगी?
मिसिज पालकीवाला मुझसे पहले मरें तभी मैं करोड़पति सेठ बन सकता हूं? तुमने तो दिमाग खराब कर दिया है मेरा।

मिसिज पालकीवाला के कमरे की ओर जाते समय घसीटा राम इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था।
बड़ी गम्भीर समस्या है। सबसे पहले तो मुझे मिसिज पालकीवाला की ऐसी सेवा करनी चाहिये कि वह किसी और को गोद लेने की बात सोच ही न सकें।

बेटा घसीटा राम, मेरे लिये दूध मंगवाया?
मैं खुद ही ले आया माता जी। आपकी सेवा करना तो मेरा परम धर्म है।
यहां रख दो मेज पर।

मेरे गोद जाने की खबर का पूरा प्रचार नहीं हुआ है। मुझे माता जी के साथ एक फोटो खिचवा कर उसे समाचार पत्रों में भेजना चाहिये।
माता जी, एक फोटो हो जाये मेरी और आपकी एक साथ ?
हुं हां खींच लो। कैमरे में रील भरी है।

घसीटा राम ने कैमरे के 'सैल्फ' का शटर दबा कर उसे मेज पर फिक्स किया और पोज बनाने के लिये फटाफट माता जी के पास आ बैठा।

घसीटा राम फोटो खिचवाने में इतना मग्न था कि उसे इस बात का होश ही नहीं था। कि उसके पीछे खिड़की से अन्दर आया हुआ हाथ क्या कर रहा है।

अच्छा अब मैं चलूं माता जी। आप आराम कीजिये।
हां, तुम भी अपने कमरे में जा कर आराम करो।

घसीटा राम ने बिना कुछ सोचे दूध के गिलास के पास रखी शीशी उठाई।

और फिर वहीं रख दी। अपने खयालों की धुन में उसे कुछ और सोचने की फुरसत ही कहां थी।
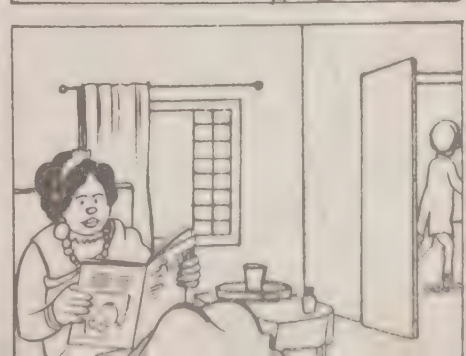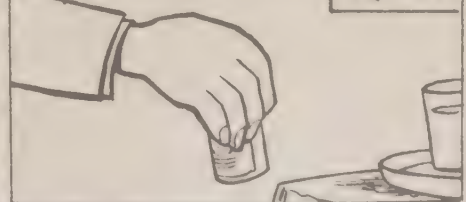
अगले रोज पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आ गई थी । मिसिज पालकीवाला को बहुत तेज जहर दिया गया था और जहर की शीशी पर घसीटा राम की उंगलियों के निशान थे ।

मेरी उंगलियों के निशान ? नहीं-नहीं ऐसा नहीं हो सकता । मैंने जहर नहीं दिया ।

हर जहर देने वाला शुरू-शुरू में ऐसा ही कहता है ।

घसीटा राम की चीख पुकार का कोई असर नहीं हुआ । और वह गिरफ्तार कर लिया गया ।

आज फंस गया यह चक्कर में ।

हर सबूत यह जाहिर करता है कि जहर घसीटा राम ने दिया है । बचने की कोई उम्मीद नहीं ।

इस सनसनीखेज कहानी में इन किस्मत के मारे कलाकारों से फिर मिलना न भूलिये

'दुलारी बहन···क्या हुआ है आपको ?'

दुलारी यूं चौंक पड़ी जैसे सोते से जाग उठी हो···फिर दोनों हाथ जोड़कर भारी आवाज में गिड़गिड़ई—

'भाई साहब, बचा लीजिए···भगवान् के लिए बचा लीजिए ।'

'दुलारी बहन किसको बचा लूं ?'

'मेरे बेटे को बचा लीजिए भाई साहब··· मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूं···मेरे बेटे को बचा लीजिए···मेरे बेटे को [illegible] लीजिए ।'

'क्या हुआ अविनाश को ?'

'भाई साहब, उसने दो दिन से कुछ नहीं खाया है—रोते-रोते उसके पपोटे सूज गए हैं···वह दो दिन में ही दो बरस का बीमार दिखाई देने लगा है—उसकी पढ़ाई-लिखाई सब छूट गई है भाई साहब···उसका जीवन-नर्क बनकर रह गया है—जब दो ही दिन में उसने अपनी यह हालत बना ली है तो आगे जीवन वह कैसे गुजारेगा भाई साहब ?'

सेठ साहब और शोभना सन्नाटे में खड़े थे···दुलारी ने हाथ जोड़कर फिर रोते हुए गिड़गिड़ाकर कहा—

'भाई साहब ! जब वह छोटा-सा था तो मैंने अपने पति की सौगन्ध खाई थी कि जब तक वह पढ़ाई में प्रथम नहीं आता मैं उसके हाथ का जल नहीं पियूंगी···भाई साहब अब के उसने बहुत परिश्रम किया था और सबको विश्वास था कि वह कालिज ही में नहीं बल्कि राज्य भर में प्रथम स्थान प्राप्त कर लेगा···और···और मैं अपने पति की सौगन्ध तोड़ दूंगी—और अब इतने बड़े धक्के से उसका मन टूट गया है···अब वह कुछ भी पढ़ नहीं सकेगा···मेरी सौगन्ध नहीं टूटेगी···और···और मेरा बेटा मेरे मरते समय मेरे गले में गंगाजल भी न टपका सकेगा—मैं अभागिन मर जाऊंगी···मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिए बिना ही मर जाऊंगी ।'

बोलते-बोलते दुलारी फिर रोने लगी और सेठ साहब और शोभना सन्नाटे में खड़े रह गए—फिर सेठ साहब ने दुखी स्वर में कहा—

'लेकिन बहन···हम इस मामले में कर ही क्या सकते हैं ।'

'आप ··आप लोग अपनी बेटी को समझा सकते हैं—[illegible] [illegible]सकते हैं कि बाल्यपन की शादी-शादी नहीं होती—उस शादी में लड़के और लड़की की सहमति नहीं होती—वह शादी का अर्थ ही नहीं समझते—बाल-विवाह तो बर्बादी के समान है ।''

सेठ साहब चुपचाप खड़े देखते रहे—जैसे उन्हें काठ मार गया हो । दुलारी धीरे-धीरे लड़खड़ाती बाहर की ओर जाने लगी—वह बड़बड़ाती जा रही थी—

'मैं अपने बेटे के हाथों गंगाजल पिये बिना ही मर जाऊंगी ।'

'मेरे भाग्य में बहू और बेटे का सुख ही नहीं लिखा है ।'

'मेरे भाग्य में बहू और बेटे का सुख ही नहीं लिखा है ।'

दुलारी बड़बड़ाती हुई इसी हालत में बाहर निकल गई और सेठ साहब एकटक उसे जाते देखते रहे ।

शोभना अपने कमरे में चुपचाप सन्नाटे में बैठी हुई थी—सेठ साहब बेचैनी से कमरे में टहल रहे थे—उनके माथे पर सलवटें थीं और आंखों में व्याकुलता टपक रही थी ।

फिर टहलते-टहलते रुककर सेठ साहब ने शोभना की ओर देखा और बोले—

'शोभना—!!'

'जी—।' शोभना इस प्रकार चौंक पड़ीं जैसे सोते-सोते जाग उठी हों ।'

'क्या सोच रही हो तुम ?'

'मैं—मैं सोच रही हूं नाथ—आपने तो अपनी आंखों के सामने अपनी आठ वर्षीय बिटिया को बाढ़ में खोया था—मुन्नी ने लाख आपके दिल के घाव पर फाहा रख दिया हो लेकिन फिर भी आपके या मेरे दिल से पद्मिनी की मौत का घाव तो कभी नहीं जा सकता ।'

'स्पष्ट है—मैं वह दुखदायी दृश्य अभी तक नहीं भूला ।'

'औलाद का दुःख भी कितना बड़ा होता है नाथ—मैं तो इस अबला के बारे में सोच रही हूं जिसका सुहाग जवानी में ही भगवान् ने छीन लिया था—जिसने अपने बेटे के लिए अपनी जवानी विधवापन में बिता दी—और वह भी इकलौता बेटा··· इस गरीब औरत के दिल पर क्या गुजरती होगी अपने को इस हाल में देखकर, यह जानते हुए भी कि मुन्नी हमारा खून नहीं फिर भी हम उसके लिए इतने बेचैन हैं—हमने तो केवल उसे पाला ही है ।'

'हां—अगर हमारी पद्मिनी जिंदा होती तो शायद उससे भी हमें इतना ही प्यार होता जितना मुन्नी से है ।'

'नाथ—मैं साथ ही यह भी सोचती हूं कि अगर मुन्नी यहां से चली गई तो हमारा क्या होगा—हमारे दिलों पर क्या बीतेगी ? मैंने मुन्नी को बेटी समझकर पाला है लेकिन आज तक उसकी सूरत नहीं देख सकी—और अब जबकि उसकी सूरत देखने के दिन समीप आ रहे हैं तो वह हमसे दूर जा रही हैं पता नहीं उसका पति कैसा हो ? वह घर जबाई बनना पसंद करे या न करे—फिर हमारा घर सूना नहीं हो जाएगा क्या ?'

'शोभना—मैं तो यह भी सोचता हूं

कि पता नहीं उसका स्वभाव कैसा हो··· उसका रख-रखाव कैसा हो—वह हमारी बेटी को खुश भी दे सकेगा या नहीं ?'

'और नाथ—यह तो सोचिए कि स्वयं हमारी बेटी भी वहां खुश रह सकेगी या नहीं ? दो ही दिन में जब रोकर उसका यह हाल हो गया है तो क्या अविनाश से बिछुड़कर उसका जीवन नर्क न हो जाएगा ? जिसने बचपन ही में अविनाश को अपने मन-मंदिर का देवता बनाकर रखा हो, क्या वह किसी ऐसे अजनबी के साथ खुश रह सकेगी जिसे उसने केवल एक ही बार बचपन में देखा हो ? पता नहीं शक्ल-सूरत और प्रकृति का कैसा हो ?'

'और फिर यह भी तो हो सकता है कि कभी उस पर अविनाश और मुन्नी के प्यार की बात खुल जाए—फिर जाने उसका व्यवहार मुन्नी से कैसा हो ?'

'हे भगवान् ! क्या होगा ?' शोभना ने अपना सिर पकड़ लिया ।

'मेरी समझ में तो इसका कोई हल आता ही नहीं है।'

'हल तो है—' शोभना ने कहा, 'अगर मुन्नी सहमत हो जाए तो हल तो है इस समस्या का।'

'वह क्या?'

'पहले आप स्वयं जाइए और लड़के के घर वालों से बातचीत कीजिए—उन्हें समझाने का प्रयत्न कीजिए कि वह अपने लड़के से मुन्नी को तलाक दिलवा दें।'

'ओहो—।'

'और क्या—इसमें हानि ही क्या है?'

'और अगर वह न माने तो?'

'तो फिर हम अदालती कारवाई भी कर सकते हैं—हम कह सकते हैं कि हमारी बेटी के फेरे उस समय हुए थे जब लड़के और लड़की को ज्ञान नहीं था—उन्हें शादी का अर्थ तक नहीं मालूम था—अब लड़की अपने बचपन के पति के पास नहीं जाना चाहती···मुन्नी अब वयस्क है। अदालत उसे बचपन के पति से तलाक दिलवाकर इस बंधन से मुक्त कर सकती है—फिर शारदा ऐक्ट के अनुसार बाल्यपन का विवाह भी तो वर्जित है।'

'लेकिन क्या मुन्नी यह बात मान जाएगी?'

आप बात तो करके देखिए—आखिर मुन्नी स्वयं भी तो अविनाश से प्यार करती है।

'मेरा विचार है वह यह प्रस्ताव नहीं मानेगी।'

'तब ऐसा कीजिए की आप यशपाल जी से बात कीजिए···वे मुन्नी के मामा हैं—अगर उनकी समझ में बात आ गई तो वह चुपचाप पहले स्वयं ही जाकर लड़के वालों से बात कर लेंगे और जब वह उन लोगों को वह सहमत कर लेंगे तो यहां आकर मुन्नी को बता देंगे।'

नहीं—मेरा विचार है यह ढंग ठीक नहीं।'

'फिर···?'

'यशपाल जी, पहले मुन्नी से बात कर के उसे सहमत कर लें तब आगे चलें।'

'यह भी ठीक है।'

'मैं आज ही यशपाल जी से बात करता हूं जाकर।'

यशपाल अभी-अभी स्टेशन से लौटे ही थे—वह अपना कोट उतार ही रहे थे कि दरवाजे पर दस्तक देकर सेठ साहब ने कहा-

'मैं अन्दर आ सकता हूं?'

यशपाल चौंककर मुड़े और जल्दी से बोले—

'आइए—आइए आपको अपने घर में आने के लिए भी आज्ञा की जरूरत है क्या?

सेठ साहब अन्दर आकर बोले—

'आपको टिकट मिल गया?'

'जी हां। रिजरवेशन भी हो गया।'

'घर पहुंचते ही आप पहला काम क्या करेंगे?'

'सबसे पहले मैं मुन्नी के ससुराल वालों को मुन्नी के जिंदा होने की खुशखबरी सुनाउंगा—और फिर उन लोगों से गौना की तिथि निश्चित करके आपको सूचना दूंगा—वह लोग यहीं से खुशी-खुशी गौना करके ले जाएंगे।'

'आपका यह प्रोग्राम बिलकुल पक्का है?'

'क्या मतलब?' यशपाल ने चौंककर पूछा।

'अगर आप बुरा न मानें तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं।'

'कहिए, कहिए—भला मैं बुरा क्यों मानने लगा।'

'आप जानते हैं हमने मुन्नी को उस समय से पाला है जब वह केवल आठ बरस की थी।'

'जी हां—मुन्नी पर हमसे बढ़कर आप का अधिकार है क्योंकि आपने उसे इतना सुख व प्यार दिया है कि शायद उसके सगे माता-पिता भी इतना न दे सकते।'

'और आप यह भी जानते हैं कि हमारी और कोई सन्तान नहीं—हमारे लिए सब कुछ मुन्नी ही है।'

'यह तो बिलकुल स्पष्ट है।'

'पहले हमने मुन्नी के लिए कोई ऐसा वर खोजने का प्रयत्न किया था जो पढ़ा-लिखा और समझदार हो, लेकिन हो गरीब घराने का और हमारे यहां ही रहने के लिए सहमत हो जाए—इसलिए कि मेरा सबकुछ मुन्नी ही का है।'

'जी हां।'

'लेकिन जब अविनाश मिल गया तो हम खुश हो गए कि मुन्नी बचपन से अविनाश [illegible] था [illegible]र वह भी तबसे उसी को और केवल उसी को प्यार करता था।'

'जी—।'

'दूसरे हमें इस बात की भी तसल्ली थी कि हम मुन्नी और अविनाश को अपने ही पास बुलालेगें—दुलारी बहन मेरी बहन बनकर रह जायेंगी—लेकिन अब तो पासा ही पलट चुका है—मुन्नी का बचपन का पति मिल गया है।'

'जी—।'

'लेकिन क्या मुन्नी का पति अपना गांव छोड़कर हमारे यहां आकर रहना पसन्द करेगा?'

'भला, मैं यह कैसे कह सकता हूं।'

'मान लीजिए अगर वह गांव छोड़ने पर सहमत न हो तो हम मुन्नी का वियोग कैसे सहन कर सकेंगे?

यशपाल कुछ नहीं बोले—वह चुपचाप यशवन्तराय की सूरत देख रहे थे—कुछ देर बाद सेठ साहब फिर बोले—

'बोलिए—उत्तर दीजिए।'

'आप कहना क्या चाहते हैं?'

'यशपाल जी, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमने मुन्नी को जितने लाड-प्यार से पाला है उससे हमें उतना ही प्यार है—एक तो हम उसकी जुदाई भी सहन नहीं कर पायेंगे—दूसरी बात अगर लड़के का स्वभाव मुन्नी के स्वभाव से न मिला तो मुन्नी का जीवन वहां कैसे गुजरेगा? इसके अलावा आप स्वयं सोचिए कि मुन्नी अविनाश से बचपन से प्यार करती है और अविनाश भी बचपन ही से मुन्नी को चाहता है। अगर मुन्नी अपने पति के साथ चली गई तो क्या वह जीवन भर खुश रह सकेगी? उसका जीवन नर्क न बन जाएगा?'

'सेठ साहब!'

'आप सोचिए जब दो दिन में मुन्नी की यह दशा हो गई है तो सारा जीवन भला वह कैसे गुजार पाएगी—फिर आज अविनाश की मां भी आई थी—इधर जो हाल मुन्नी का है वही हाल अविनाश का भी है—

समाचार

दूरदर्शन समाचार की दीवाना पैरोडी

आज के मुख्य समाचार इस प्रकार हैं, योजना आयोग की बैठक स्थगित, विश्व खब्बू सम्मेलन का प्रधान मन्त्री द्वारा उद्‌घाटन, श्रीनगर में एक बकरी की मृत्यु, हरिजनों और पिछड़े वर्गों के लिए सस्ती हवाई यात्रा, पप्पू क्लब ने खोखो खिताब जीता। अब आप पूरे समाचार सुनिये—

आज दिल्ली में योजना आयोग को बैठक हुयी। आयोग के सदस्य आधा घंटा लेट पहुंचे लेकिन योजना आयोग के अध्यक्ष ग्यारह बजे तक भी प्रकट नहीं हुए। इस बीच सदस्य या तो सिगरेट पीते रहे या हंसी मजाक करते रहे। कुछ ने आपस में बीबी बच्चों के बारे में भी बातें कीं और नौकर न मिलने की समस्या पर भी गहन विचार विमर्श किया। एक सदस्य रात की कॉक-टेल के हैंग ओवर के कारण कॉरीडोर में चक्कर लगाते रहे। साढे ग्यारह बजे आयोग के अध्यक्ष का फोन आया कि वे न आ सकेंगे। उनकी छोटी साली काला पत्थर के टिकट लाई है मैटिनी शो के। अतः आयोग की बैठक स्थगित कर दी गई।

आज रोहतक में प्रधान मन्त्री ने विश्व खब्बू सम्मेलन का उद्‌घाटन किया। सम्मेलन में देश विदेश के सैंकड़ों प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्मेलन अध्यक्ष आकी बोम्बो ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया व भारत में खब्बुओं के लिए किये जा रहे काम की सराहना की। प्रधानमन्त्री ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि विश्व में अमीर देशों के खब्बुओं को गरीब देशों के खब्बुओं के लिए अनुदान देना चाहिए।

आज दोपहर को श्री नगर के पास एक पहाड़ी से एक लंगड़ी बकरी फिसल कर गिर पड़ी और मर गयी। सारे देश से इसके लिए शोक समाचार प्राप्त हो रहे हैं। काश्मीर के मुख्य-मत्री ने कहा कि हमें बकरी के खुरों के निशान पर चलना चाहिए।

समाज कल्याण मंत्री ने घोषणा की है कि जब चंद्रमा पर यात्रा करनी संभव हो जायेगी तब हरिजनों और पिछड़े वर्गों के लोग चाँद की यात्रा करना चाहेंगे तो सरकार एयर इंडिया के जहाजों में इन वर्गों के लोगों को बम्बई से न्यूयार्क तक के टिकट में पांच रुपये की छूट देगी।

आज सफदर जंग में सरोजनी नगर के पप्पू क्लब ने रंगड़ पुरा क्लब को खोखों में हराकर मिट्टी का कसोरा जीत लिया। इस मैच के कुछ महत्व पूर्ण अंश देखिए।

अब कुछ और समाचार, बम्बई में नेताजी सुभाष बोस प्रकट, ब्रूसेल्ज के वैज्ञानिकों ने सस्ती कृत्रिम पेट्रोल बनाने में सफलता प्राप्त की तथा अमरीका व रूस में रूफनिस्तान के प्रश्न पर युद्ध छिड़ गया और दोनों ने एक दूसरे के शहरों पर सैंकड़ों हाइड्रोजन बम गिराये।

समाचार समाप्त करने से पहले मुख्य समाचार एक बार फिर, योजना आयोग की बैठक स्थगित, प्रधान मन्त्री द्वारा विश्व खब्बू सम्मेलन का उदघाटन और पिछड़े वर्गों व हरिजनों के लिए सस्ती हवाई यात्रा।

समाचार समाप्त हुए।

नमस्ते !

आदिमानव
मम्मी, मैं तो तंग आ गई यह जानवरों की खुरदरी खाल के कपड़े पहनते-पहनते। पानी में भीगते ही सिकुड़ते हैं ओर अकड़ जाते हैं ! हाय कब वह दिन आयेंगे जब मनुष्य खाल नहीं किसी और चीज के कपड़े बनाकर पहनेगा नर्म-नर्म चिड़िया के परों जैसे।
पगली, ऐसा नहीं कहते। क्योंकि मुझे तो जानवरों की खाल ओढ़ना बहुत अच्छा लगता है। तेरा तो दिमाग फिर गया है।
तुम्हें अच्छा लगता हो तो लगता रहे मुझे तो कतई अच्छा नहीं लगता ! तुम पुराने लोग दकियानूसी ख्यालों के हो बिल्कुल बूर्जुआ।
मैं तो यह भी सोचती हूं कि जब ऐसे दिन आयेंगे तो परम्परायें और रिवाज भी बदलेंगे। फिर नारी उसी तरह दबी नहीं रहेगी जैसे इस आदिम युग में है पुरुषों की गुलाम। नये कपड़ों के ईजाद होने के साथ ही नारी चेतना जागेगी वह लड़ेगी और आजाद हो जायेगी।
यह नई पीढ़ी की सिरफिरी बातें हैं।
यह तुझसे किसने कह दिया कि नारी पुरुषों की गुलाम है ? मैं तो कहती हूं कि आज जब मनुष्य जानवरों की खाल ओढ़ रहा है तो इस युग में नारी पुरुषों से बढ़कर है। आज पुरुषों को जो हम कह सकते हैं वह फिर कभी नहीं कह सकेंगे।
वह कैसे ? मेरी समझ में नहीं आया
अभी उदाहरण देती हूं। देखो तुम्हारे डैडी वापस लौट रहे हैं। मैं गुफा में उनकी हिरण की खाल का ओढ़ना उधेड़ कर दोबारा सीने जा रही हूं।
भागवान मैं आ गया। क्या कर रही हो तुम ?
मैं तुम्हारी खाल उधेड़ रही हूं।
ही ही ही

फैण्टम --- जंगल शहर

एयर पोर्ट-मावीतान, बंगाला
आपकी बुकिंग हेलीकॉप्टर के लिए हमारे पास है। मिसेज वाकर आपको कहाँ जाना है?
एक जगह जिसका नाम है खोपड़ी वाली गुफा।

यह तो घने जंगल में है। वहाँ पर जहाज उतारना असम्भव है।
लेकिन मैं वहाँ गई हूँ। और अब जरूर जाना है।
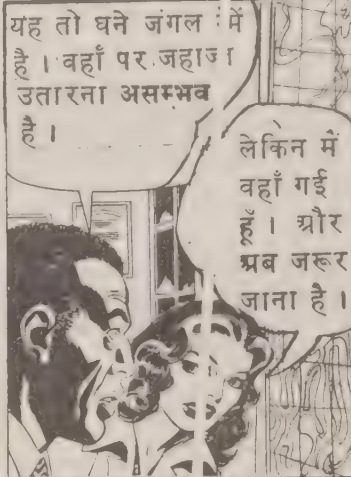
मैं वहाँ किसी को मिल रही हूँ।
किसी को मिल रही हो? वहाँ पर तो हब्शी, शेर, चीते हैं।
यह पागल है।

मुझे जरूर जाना है। अभी चलिए।
जरूर। एक मिनट रुकिए।

क्या आप वही हैं जो घने जंगल में जाना चाहती हैं?
हाँ, मैं वही हूँ। आप कौन हैं?

मैं एअर-पोर्ट का डाक्टर हूँ। यहां लोग सोचते हैं कि आप कुछ... अर्रर्र...।
पागल हूँ? क्योंकि मैं वहाँ जाना चाहती हूँ? मैं कहती हूँ मैं पहले वहाँ गई हूँ।

श्रीमती जी आपको जहाज नहीं ले जा सकता। अगर आपको किसी दोस्त को फोन करना है तो...।
दोस्त? हां! आप राष्ट्रपति लुआगा को फोन करिये।
?!
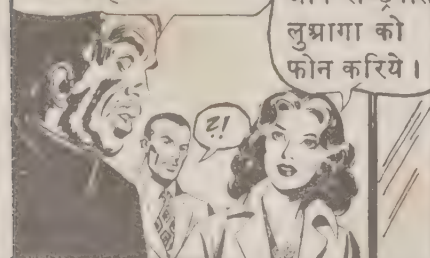
राष्ट्रपति से बात करना चाहती है ...सचमुच ही पागल है।
मैं एम्बुलेंस बुलाता हूं।

वह सोचाते हैं मैं पागल हूँ, अब मैं क्या करूं?
मैं बच्चे को जन्म देने वाली हूँ। अगर फोन नहीं मिलाओगे तो मैं यहीं जन्म दूंगी।
!!!

क्या कठि-नाई है?
हैलीकोप्टर जंगल में ले जाना चाहती है...और राष्ट्रपति से फोन पर बात करना चाहती है।
उसे व्यस्त रखो, मैं एम्बुलेंस बुलाता हूँ।

श्रीमती जी, अगर आप अपना नाम बतायेंगी तो मैं खुशी से "आपके मित्र" राष्ट्रपति को फोन मिलाऊंगा।

तो मिलाओ!
अभी लो... अहः!
फैण्टम का अच्छा निशान!

यह तुम्हें कहां मिला ?
इसे उसने मुझे दिया ।
क्या तुम उसे जानती हो ?
फ़ैण्टम का··· अच्छा निशान ?

अच्छी तरह
यदि मैं यह कहूं कि वह मेरा पति है तो यह समझेंगे कि मैं पागल हूं ।
कृपया अब राष्ट्रपति लुआगा से बात कराओ···

वह उसे कैसे जानती है? वह पागल है ।
वह मैडल उसे पाया है या उसने चुराया है ।
महल को फोन कराना उसका मजाक है ।

यहाँ एक औरत है जो परेशान दिखाई देती
है । कहती कि वह राष्ट्रपति को जानती है ।
उसका नाम··· हां···मिसेज डियाना पामर वॉकर ।

उसके बारे में कभी नहीं सुना । वह खतरनाक हो सकती है ।
इस पर नजर रखो और उसकी छानबीन कराओ ।

मैंने महल में फोन किया था वे आपको नहीं जानते ।

लेकिन राष्ट्रपति··· ने तो मेरी शादी की थी ।
ऊंह···क्या इसे सजा मिलेगी ।

मेरें साथ आओ, तुम्हें तलाशी देनी होगी ।
ओह···यह तो बहुत भयंकर है ।
बेचारी औरत अफसोस है···

बंगाला के राष्ट्रपति लुआगा
किसका फोन था मेजर ?
सर, हवाई अड्डे पर एक पागल औरत है, वह कहती है आपने उसकी शादी की···

उसकी जांच कर रहे हैं···उसका नाम डियाना पामर··· कुछ ऐसा ही है ।
डियाना

कृपया अपने कपड़े उतार दीजिए, मुझे तलाशी लेनी है ।
मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी और न ही तुम !

ईईईई

बंगला के राष्ट्रपति डा० लुआगा ।
राष्ट्रपति आ रहे हैं । सावधान !
वह कहां है ?

मैंने तुमसे कहा कि जांच-पड़ताल के लिए अपने कपड़े उतारो।
नहीं

मैं जानती हूं कि तुम अपना काम कर रही हो! परन्तु मुझे खेद है।
डियाना का १० वीं डिग्री का ब्लैक बैल्ट कराटे···

डियाना
ओह··· मैं तुम्हें देखकर बहुत खुश हूं।
धमाका
आह···

डियाना तुम अजीब हो! यहाँ क्या कर रही हो?

फैण्टम की गुफा तक मैंने एक हैली-कोप्टर किराये पर लेने को कोशिश की लेकिन उन्होंने सोचा कि मैं पागल हूं।

खाना खाने चलो···मैं देखूंगा मैं क्या कर सकता हूं?
वह उसे जानती है।
वह पागल नहीं है···

जब मैंने कहा कि तुमने मेरी शादी की तो उन्होंने सोचा कि मैं पागल हूँ। मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि तुम और राष्ट्रपति गुरांडा मेरी शादी में सम्मिलित हुए थे।
लुआगा। इससे तो एक रोचक अफवाद फैल जायेगी।

क्या तुम यहाँ एक लम्बे भ्रमण के लिए आई हो?
कब तक ठहरूं, यह तो बच्चे के ऊपर निर्भर करता है।

डियाना, क्या मैं पूछ सकता हूं कि कौन-सा बच्चा?
मेरा, जो पैदा होने वाला है।

खुश खबरी। क्या तुम बच्चे को यहां जन्म दोगी या घर पर?
यहीं, डा० लुआगा।
हमारे यहाँ बहुत अच्छे हस्पताल हैं, मैं तुम्हारे लिए प्रबन्ध कर दूंगा।

बंगाला का राष्ट्रपति लुआगा आपकी बहुत मेहरबानी, लेकिन यहाँ का मतलब यहीं नहीं खोपड़ी वाली गुफा है।

ड़ियाना उस गुफा में नहीं।
तुम भी मेरी मां को तरह सोच रहे हो।

प्र० : इत्र का प्रयोग संसार में कब और कहां हुआ था ?

उ० : ऐसा अनुमान है कि इत्र का प्रयोग तथा मानव जाति का आरम्भ साथ-साथ ही हुआ होगा। आरम्भ में सुगन्ध प्राप्त करने के लिए मानव ने सुगन्धित धुआं देने वाली लकड़ी, पत्ते या गोंद इत्यादि को जला कर सुगन्ध का अनुभव किया होगा।

हमें विदित है कि मिस्र में आज से पांच हजार वर्ष पूर्व भी इत्र का प्रयोग किया जाता था। परन्तु गुलाब की पंखुड़ियों से गुलाब जल बनाना। अरब के लोगों ने एक हजार तीन सौ वर्ष पूर्व आरम्भ किया था। उन्होंने गुलाब जल का प्रयोग न केवल सुगन्धि बल्कि औषधि के रूप में भी किया।

सबसे पहला इत्र भी गुलाब का ही बना था। ये गुलाब के फूल की पंखड़ियों का प्राकृतिक तेल था। पूरे एक एकड़ भूमि में उगाये गये गुलाब के फूलों से केवल एक टन गुलाब की पंखड़ियां प्राप्त होती हैं। और इन एक टन पंखड़ियों से केवल एक पाउंड इत्र बन पाता है, इसी कारण इत्र इतना महंगा होता है।

गुलाब, चमेली, बनपशा तथा संतरे के फूलों से अमूल्य इत्र बनाये जाते हैं। चंदन, देवदार की लकड़ी और पेपरमिंट लैवेंडर, मेंहदी, जरेनियम तथा अदरक की जड़ से भी बहुत बढ़िया इत्र बनाये जाते हैं।

प्र० : क्या आकस्मिक धक्के या आघात से हमारे बाल सफेद हो जाते हैं ?

उ० : इस प्रश्न का उत्तर "हां" है परन्तु ध्यान देने की बात है कि आकस्मिक आघात या नस-तन्तुओं की बीमारियां बालों को सफेद क्यों कर देती हैं। इसी प्रकार बुढ़ापे के कारण बाल सफेद होने के कारण का भी पूरा-पूरा पता अभी तक नहीं है। फिर भी कोशिश करते हैं कि इसके बारे में कुछ जान लें। बाल वास्तव में खाल के भीतर उत्पन्न होता है। यहां ये जड़ पकड़कर ट्यूलिप फूल के बल्ब के समान ऊपर को उगना आरम्भ होता है। जैसे-जैसे बाल ऊपर को बढ़ता है ये एक सींगनुमा तत्व में बदल जाता है और बाहरी सतह पर बाल चपटे से हो जाते है तथा एक-दूसरे के साथ गुच्छों में उगते जाते हैं। इसी से बालों में धातु जैसी चमक उत्पन्न होती है।

बाल की जड़ के कुछ अणुओं में रंगीन तत्व होता है। ये अणु भी बाल के अणु के साथ-साथ बढ़कर बाल के ऊपरी भाग में पहुंच कर मर जाते हैं तथा बाल में रंगीन बाल को दाने से इकट्ठे कर देते हैं इसी से तत्व पीले रंग प्राप्त होता है। बाल का अपना सींगनुमा तत्व पीले रंग का होता है। रंग के दाने भूरे रंग के हर शेड से लेकर लाल तथा गहरे काले होते हैं। ये रंग के दाने तथा बालों का सींगनुमा तत्व मिलकर बालों को सुनहरी से काले तक के रंग प्रदान करता है। हर मनुष्य के बालों का रंग पूर्वजों से विरासत में मिले उनके शरीर के "जीन्स" पर निर्भर होता है।

शारीरिक रोग तथा आकस्मिक धक्के या आघात और बुढ़ापे के कारण बालों में रंगीन तत्व के अणु रंगीन तत्व के दाने कम इकट्ठे कर पाते हैं, और बालों में रंगीन तत्व की कमी होकर ये सफेद होने लग जाते हैं। इसके अतिरिक्त वायु स्थान या वायु के बुलबुले बनने आरम्भ हो जाते हैं और ये रंगीन तत्व के दाने स्थान लेने लग जाते हैं। अनुमान है कि अत्यधिक चिन्ता, उत्तेजना या दुःख की स्थिति में ये बुलबुले बालों के अणुओं में भी उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे बाल सफेद हो जाते हैं, ये कैसे होता है ये कहना अभी भी कठिन है।

प्र० : रेबीस कौन सा रोग है, क्या इस रोग के घातक प्रभाव से बचा जा सकता है ?

उ० : मनुष्य द्वारा जाने-जाने वाले रोगों में रेबीस सबसे पुराना रोग है। इस रोग के कीटाणु मनुष्य तथा पशु के लिए लगभग घातक ही सिद्ध होते हैं, इस रोग का अभी तक कोई बहुत प्रभावशाली इलाज नहीं है।

रेबीस के रोग का प्रभाव दिमाग तथा स्पाइनल कोर्ड पर पड़ता है इसी कारण ये रोग जीवन के लिए इतना घातक है। इस रोग की छूत एक वाइरस द्वारा फैलती है, जिसका अर्थ हुआ कि इसके कीटाणु साधारण माइक्रोस्कोप द्वारा भी नहीं देखे जा सकते।

रेबीस का प्रभाव हर प्रकार के गर्म रक्त के प्राणियों पर होता है, परन्तु मनुष्य में इस रोग का वाइरस, इस रोग से पीड़ित कुत्ते के काटने पर आता है। यही कारण है कि कुत्ते के काटने पर सदा उस कुत्ते पर निगरानी रख कुत्ते की रोग के लिए जांच भी की जाती है। इस कार्य में ढील डालना खतरे से खाली नहीं है।

कुत्ते में भी इस रोग का पता लगना सरल नहीं होता क्योंकि इस रोग के लक्षण दिखाई देने में चार से छः सप्ताह का समय लग जाता है। इस रोग से पीड़ित होने पर आरम्भ में कुत्ता चुप और सुस्त हो जाता है, बाद में उसे बुखार हो जाता है तथा वो भोजन नहीं करता। मुंह से लार तथा झाग निकलने लगते हैं, कुत्ता उत्तेजित हो जाता है तथा भोंकने और काटने लग जाता है। इन लक्षणों के आरम्भ हो जाने पर कुत्ते का बचना असम्भव सा ही हो जाता है। तीन से पांच दिन के भीतर उसकी मृत्यु हो जाती है।

मनुष्यों में भी ये रोग कुत्ते के समान ही आरम्भ होता है। रोग के कीटाणु शरीर में घुस जाने पर पहले मनुष्य गुमसुम सा हो जाता है फिर उसे बुखार हो जाता है तथा वो अजीब सा महसूस करने लगता है। जल्दी ही उसे अपने शरीर की मांस पेशियां खिंचती प्रतीत होती हैं। इस अवस्था में पानी पीने का प्रयास करने पर उसके मुंह और गले की मांस पेशियां ऐसे सिकुड़ जाती हैं जैसे उसे दौरा पड़ गया हो। ये दौरा नसतन्तुओं में अन्तर आ जाने के कारण पड़ता है। परन्तु ऐसा विश्वास किया जाता था कि रोगी पानी से डरने लगता है इसी कारण रेबीस के रोग को हाइड्रोफोबिया, जिसका अर्थ है पानी का डर के नाम से पुकारा जाता था। ये इस रोग का सही विवरण कतई नहीं है। वास्तव में मृत्यु सांस लेने के अंगों में दौरे के कारण सिकुड़न आने से होती है।

इसकी रोक-थाम आवश्यक। कुत्ते के काट लेने पर काटने के स्थान को भली-भांति साफ कर देना चाहिए तथा तीन दिन के भीतर ही एक प्रकार के सीरम का सेवन करवाया जाता है। ये सीरम रोग के कीटाणुओं के मस्तिष्क पर हमला करने के पहले ही कार्य करता है। कुत्ता काट लेने पर दो से तीन सप्ताह तक प्रतिदिन इन्जेक्शन दिए जाते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल

ज़रूरत है एक चोर की

म्हारे मुहल्ले में आजकल चारों तरफ चोरियां हो रही हैं। आज राम प्रकाश शर्मा और नन्द किशोर दुग्गल के घर चोरी हुयी है। चोर बहुत सा सामान उठाकर ले गये।

पानी के टब में बैठ कर सोचना पड़ेगा।

मुझे तो दाल में काला नजर आता है। इसी महीने चोरियां क्यों हो रही हैं? यह एक गहराई से सोचने की बात है।

ग्रोर मैं लगातार सुबह दस मील की दौड़ लगाकर पिलखा सिंह बनूंगा । चोर चोरी करके भागने में सफल हो भी गया तो कहां तक भागेगा । मैं कुछ ही देर में उसे धर दबोचूंगा । लोग ठीक ही कहते हैं कि पैसा एक जगह नहीं टिकता, पैसा ग्राने से पहले ही मुझे इतना दौड़ा रहा है, खुद तो कितना दौड़ता होगा ? दिन रात बैंकों ग्रौर तिजोरियों के स्टेडियमों में चक्कर लगाता ही रहता है । लेकिन बच्चू पिलपिल भी कम नहीं है । दौड़ में तुझे ग्रागे नहीं निकलने दूंगा ।

DILKHASINGH

आज भी नहीं आया चोर।

एक महीना हो गया हमको चोर साहब की राह देखते।

इतनी बेसब्री से मजनूं ने लैला का भी इन्तजार नहीं किया होगा। मगर अफसोस चोर बड़े बेवफा निकले। वह नहीं आये।

यह तो बड़ी मुश्किल है। हम दिन को सोते हैं रात को जागते हैं ऐसा कब तक चलेगा ?

हमारे ट्रेनिंग की यह तो बड़ी बेइज्जती कर रहे हैं चोर भाई लोग। यह बात तो ऐसी ही हुई जैसे शादी हो गई लेकिन हनीमून नहीं हुआ

अब चूहे तू ही कोई तरकीब निकाल। हम कब तक हाथ पर हाथ धरे इस तरह बैठे रहेंगे ?

देखो एक तरकीब आई तो है मेरे दिमाग में। वही अजमाते हैं।

यह बात हुई न।

खुशखबरी

चोर भाइयों के लिए सुनहरा मौका।

हमें यह सूचना देते हुए खुशी होती है कि अपने गरीब खाने को चोर भाइयों के चरण कमलों से शोभित करने के लिए हमने इनामी योजना शुरू की है। जो चोर भाई हमारे घर से तीन सौ रुपये का माल चोरी करके ले जायेगा हम उसे एक प्लास्टिक की बाल्टी फ्री दे देंगे। पांच सौ रुपये का माल चोरी करने पर स्टेनलैस स्टील का गिलास और एक हजार का माल चोरी करने पर टैरीकॉट का पैंट पीस। जो हमारा सारा घर खाली करेगा उसे हम चार बैंड का ट्रांजिस्टर उपहार में देंगे। मौके का फायदा उठायें।

आजकल एडवर्टाइजमैंट का जमाना है। भाई हम यह इश्तहार छपवा कर अखबारों में रखकर घर-घर पहुंचा देंगे। जिस प्रकार दुकानदार ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए हथकंडों का प्रयोग करता है हम भी वहीं करेंगे। आशा है कोई न कोई जरूर हम पर मेहरबान होगा।

यह दिन भी देखना था।
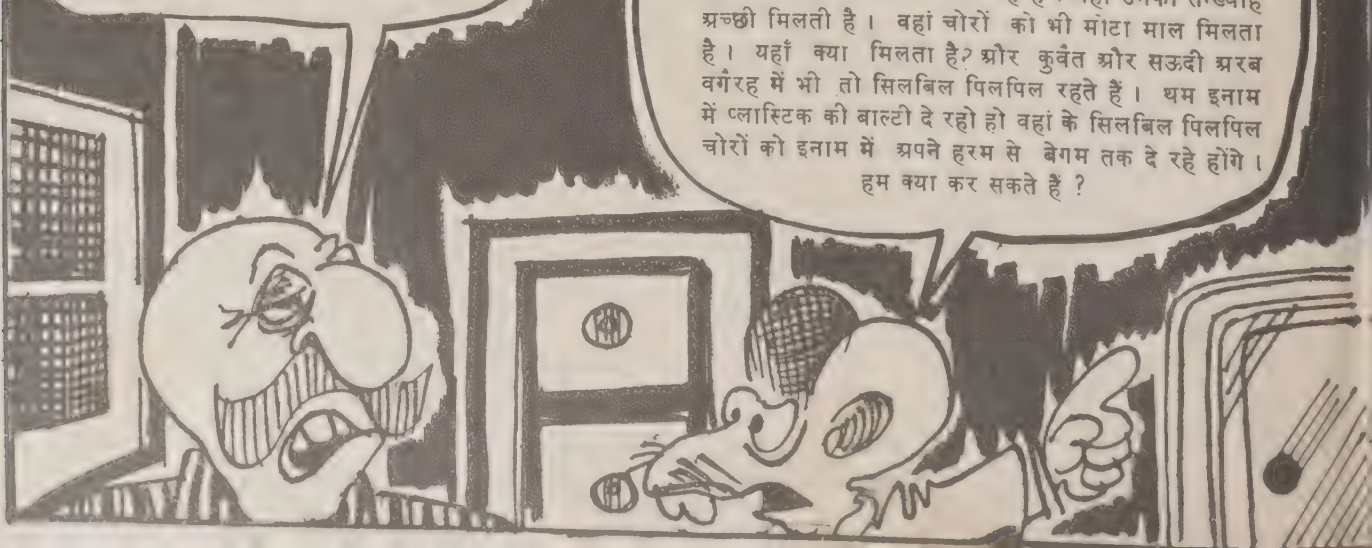
मुझसे उन दोनों की हालत देखी नहीं जाती। चोर न आने के गम में बेचारे सूख रहे हैं। हंसना भूल गये हैं। खाना तक नहीं खाते, इस तरह जिन्दगी की गाड़ी कब तक चलेगी? आज रात देर तक जाग कर मैं कुछ ना कुछ और तरकीब निकाल कर ही रहूंगा। मैं ही तो एक मात्र इनका दोस्त हूं। मैं मदद नहीं करूंगा तो और कौन करेगा?

रात को मैंने याड़ी एक नयी तरकीब सोची है। मेरा पक्का विश्वास है कि इससे हमारा काम बन ही जायेगा। थमारे दुख कट जायेंगे।

कौन सी तरकीब है चूहे? जल्दी बता।

हम चोर को नौकरी देते हैं। उसकी ड्यूटी ही हमारे घर चोरी करना होगा। कोई न कोई तो ऐसा कामचोर चोर यहां बचा होगा जो बाहर नहीं गया। हम आज ही विज्ञापन देते हैं अखबारों में।

भारत के विख्यात स्पिनर भागवत चन्द्र शेखर ने मार्च के महीने में जब हरियाणा तथा कर्नाटक का रणजी ट्राफी क्वार्टर फाइनल मैच बंगलोर में हुआ तो प्रथम श्रेणी क्रिकेट से अपने सन्यास की घोषणा की। मैच के अंत में खिलाड़ी तथा दर्शक पैविलियन तक उन्हें उठा कर ले गये और अपना आभार प्रकट किया। इसके साथ ही भारतीय क्रिकेट के एक अध्याय की समाप्ति हो गयी।

वे क्रिकेट प्रेमी जिन्होंने चंद्रशेखर के समय के टैस्टमैच देखने सुनने का आनन्द लिया है वे उनकी बिलक्षण गेंदबाजो नहीं भुला पायेंगे। उन जैसा दूसरा स्पिनर पैदा होना उतना ही कठिन है जितना दूसरी लता मंगेशकर का जन्म लेना।

१६ वर्षों में फैले अपने टैस्ट क्रिकेट जीवन में चन्द्रशेखर ने ५८ टैस्टों में २४२ विकटें ली। रणजो ट्रॉफी में उनके नाम ४३६ विकटें हैं। और विश्व के एक मात्र ऐसे टैस्ट खिलाड़ी हैं जिन्होंने अपने रनों से ज्यादा विकटें ली हैं।

उनके तरकस में कई तरह के तीर थे। वे गुगली, लैगब्रेक, टॉप स्पिनर और लूप बाल के अतिरिक्त बीच-बीच में एक तेज गेंद भी फेंकते थे। उनकी तेज वाली गेंद काफी तेज होती थी। उनकी तेज गेंद के बारे में वेस्ट इंडीज के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज विवियनरिचर्ड ने कहा था, 'मैन, इसकी तेज गेंद तो थामसन के बराबर गति वाली है।'

उनका यह सब कमाल था पोलियो-ग्रसित कलाई के कारण। वे अपनी दायीं कलाई को हमेशा कमीज की बांह के कफ से ढके रहते थे अतः बहुत कम खिलाड़ियों को उनकी चमत्कारी कलाई के दर्शन हुये हैं। जिन्होंने उस कलाई को देखा है वे सब
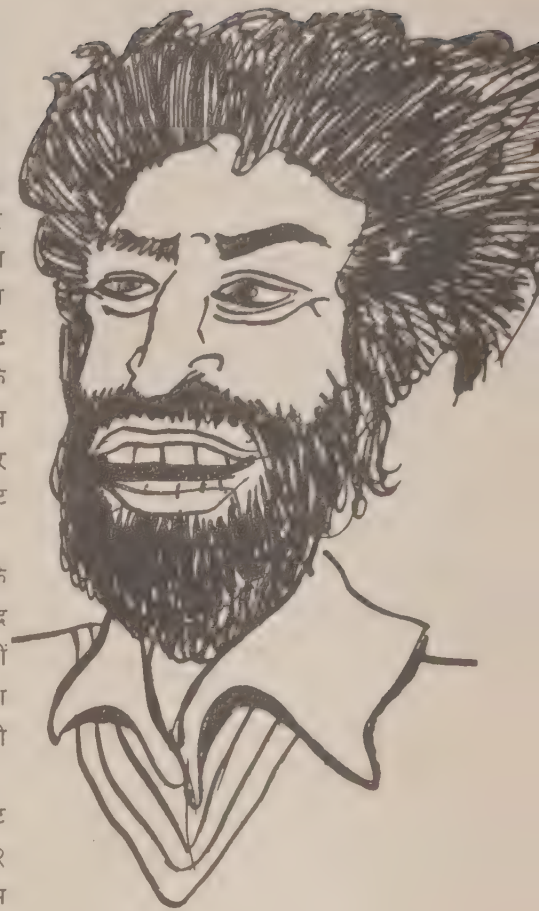
अचम्भित हैं कि ऐसी कलाई के सहारे किस प्रकार यह आदमी विश्व को भयभीत करने वाला बॉलर बना !

चन्द्र शेखर को प्यार है स्वर्गीय मुकेश की आवाज से। उनके पास मुकेश की आवाजों के कई कैसेटों के सैट हैं। टैस्ट मैचों में अवकाश वाला दिन चन्द्रशेखर मुकेश के गानों में खोकर बिताते हैं। दोनों में अच्छी मित्रता थी। टैस्टमैचों में बम्बई प्रवास के दौरान दोनों अवश्य कुछ समय साथ गुजारते थे। जब मुकेश की मृत्यु हो गयी तो अन्तिम यात्रा में भाग लेने चंद्रशेखर भी हवाई जहाज द्वारा पहुंचे थे।

चंद्रा को घोड़ों की दौड़ का भी शौक है चंद्रशेखर के नाम विश्व क्रिकेट में लगातार आठ शून्य बनाने का रिकार्ड भी है।

हरविन्दर सिंह खनूजा—जबलपुर

प्र० : विश्व कप प्रतियोगिता में भारतीय टीम की बुरी पराजय का मुख्य कारण बताइये ?

उ० : भारत में सीमित ओवरों के मैचों की कमी। सीमित ओवरों के मैच खेलने के लिए एक अलग प्रकार की एप्रोच व मानसिक तैयारी की जरुरत होती है। भारत इस प्रकार के मैचों में तभी सफल हो सकता है जब या तो भारतीय खिलाड़ी इंगलैंड में खेल का अनुभव प्राप्त करें या भारत में ही सीमित ओवरों के मैचों का अधिकाधिक प्रचलन किया जाए। भारत में पांच दिन के टैस्टमैच इतने लोकप्रिय हैं कि किसी और प्रकार के मैचों की फिलहाल कल्पना नही की जा सकती।

मनजीत सिंह

प्र० : क्या कोई खिलाड़ी खुद ऊंचा उठकर भी नीचे गिर सकता है।

उ० : गिरता ही वही है जो चढ़ता है। जो चढ़ा ही नहीं वह क्या गिरेगा ?

नरसिंह सांगली, बम्बई

प्र० : ऐसा कहा जाता है कि कूँग फू के मशहूर खिलाड़ी ब्रुसलीने मोहम्मद अली को चैलेंज देके बाक्सिंग में हराया था क्या यह सच है ?

उ० : नहीं।

विजय कुमार अग्रवाल—जयपुर

प्र० : किसी ओवर की छः गेंदों में अगर नो बाल हो जाती है तो उसे उन छः गेंदों में गिना जाता है या छः सही बाल होने जरूरी है।

उ० : छः सही बाल होने चाहिएं। अगर एक ओवर में छः नो बाल हो जायें तो समझिए कि गेंदबाज ने वास्तव में १२ गेंद फेंकी हैं उस ओवर में।

तरसेम राही 'टिंकू'—मोगा

प्र० : एक पारी में सबसे अधिक विकेटें लेने का कौन सा रिकार्ड है और यह रिकार्ड किस सन में बना ?

उ० : इंगलेंड के जिमलेकर ने पारी की सारी यानि दसों विकेटें ५३ रन देकर ली थीं १९५६ में।

प्रकाश दीप कमल, बिहार

प्र० : दक्षिणी अफ्रीका 'टैस्ट क्रिकेट' क्यों नहीं खेलता इसका क्या कारण हो सकता है ?

उ० : दक्षिणी अफ्रीका की गोरी सरकार काले लोगों के साथ भेदभाव की नीति अपनाती है, यहां तक कि अपनी टीमों में कालों को स्थान तक नहीं देती। इसके विरोध में दूसरे देशों ने द. अफ्रीका का बहिष्कार कर रखा है।

मोहन लाल शर्मा, करनाल

प्र० : एक टैस्ट श्रृंखला में सब से ज्यादा विकट लेने का श्रेय किसदेश के बालर को प्राप्त है ?

उ० : १९१३-१४ की इंगलैंड दक्षिणी अफ्रीका सीरीज में गेंदबाज वर्न ने ४९ विकेटें ली थीं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एलबर्ट आइंस्टाइन के कुछ संस्मरण

—डा० हरि मोहन

एक बार एलबर्ट आईनस्टाइन जर्मनी के एक रेस्तरां में कुछ खाने पीने गए। भूल से उनका चश्मा घर पर रह गया था। वेटर ने आईनस्टाइन से मीनू की तरफ इशारा करते हुए पूछा आदरणीय महोदय आपके लिए मैं क्या क्या पेश करूं। आईन-स्टाइन ने चश्मा न होने के कारण मीनू को पढ़ने में अपनी असमर्थता दिखाई। यह देख कि यह सीधा सादा पुरुष शायद कुछ पढ़ना-बढ़ना ही नहीं जानता वेटर ने तुरन्त कहा, 'साहिब मेरे लिए भी काला अक्षर भैंस बराबर ही है। मैं मीनू पढ़ने के लिए मैनेजर साहिब को बुलाता हूँ। पास बैठे लोग जो आईनस्टाइन को जानते थे। यह सुनकर हँसी से पागल हो गए।

● एक बार उनको उपहार में कुछ कफलिंग और कुछ टाईयां प्राप्त हुई। उन्होंने उपहारों को देखकर केवल इतना ही कहा कि यह मेरे लिए सिर्फ अतीत की याद दिलाने के काबिल ही हैं। मैं इसका इस्तेमाल नहीं कर सकता।

● प्रिंसटन के रिसर्च इंस्टीच्यूट में पहुंचने के बाद उनका भव्य स्वागत हुआ। वहां के प्रशासनिक अधिकारी ने पूछा, "प्रोफेसर एलबर्ट आईनस्टाइन आपके लिए मैं किन-किन उपकरणों का प्रबंध कर दूं ? कृपया मुझे इन सबके प्रबन्ध करने के लिए डिक्टेशन दे दीजिए। यदि समय अभी न हो तो फिर आपकी सेवा में उपस्थित होऊंगा" एलबर्ट आईनस्टाइन ने मुस्कराते हुए कहा, 'मुझे कुछ कागज चाहिए, कुछ चाक चाहिए और रद्दी इकट्ठा करने वाली कुछ रद्दी की टोकरियां और यदि टोकरियां बडी-बड़ी हों तो अच्छा रहेगा। बस यही सब कुछ मुझे चाहिए।" इस पर अधिकारी स्तब्ध रह गया और उसने पूछ ही लिया 'सर, बड़ी बड़ी रद्दी की टोकरियां किसे लिए ?" आईनस्टाइन ने कहा, "जब मैं कैलकूलेशन करने में गलतियां करूंगा तो रद्दी कागजों का ढेर लग जाएगा और मैं उनको कहां रखूंगा ?"

● एक बार आईनास्टाइन फ्रांस में जब एक सभा में भाषण कर रहे थे और उन्होंने काफी कुछ कोशिश की कि वह अपने द्वारा प्रतिपादित रिलेटिविटी के नियम को सब तक पहुंचा पायें लेकिन अधिकतर चेहरे ऐसे लगते थे कि मानो उनकी समझ से बाहर यह सब कुछ हो रहा हो। अचानक एक सुन्दर महिला ने प्रश्न किया। महाशय आईनस्टाइन हमें कुछ प्रयोग द्वारा अपनी रिलेटिविटी के नियम को दर्शाइये। भाषण से तो यह हमारे समझ के बाहर है। आईन-स्टाइन ने तुरन्त जवाब दिया, देखिए मेरा थोड़ी देर दिया हुआ भाषण आप लोगों को ऐसा लग रहा है जैसे मैं आपके घंटों व्यर्थ कर चुका हूँ। परन्तु आप जैसी सुन्दर महिला को निहारते हुए मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने आपको अभी ही निहारना शुरू किया है। और यदि आप यह चाहती है कि मैं इसको प्रयोग द्वारा दर्शाऊं तो कृपया मुझको और निहारने का अवसर दीजिए।

● एक बार किसी ने आईनस्टाइन से कहा, 'आप परमाणु शक्ति के पिता हैं।' तो वह बोले,'पिता ही नहीं आप मुझे पितामह कह सकते हैं।' उस व्यक्ति ने कहा तो पितामह आप यह बताइये कि अब हिरोशिमा नागासागी के बाद किसका नम्बर है,तृतीय विश्व युद्ध कहां होगा ? और कौन से अस्त्र-शस्त्र काम में लायेंगे। क्या आपका परमाणु बम ही काम में लाया जायेगा ? आईनस्टाइन ने तुरंत कहा—महाशय मैं तीसरे युद्ध के बारे में तो निश्चित रूप से नहीं बता सकता परन्तु यह अवश्य जानता हूं कि चौथा विश्व युद्ध केवल पत्थर के बनाये अस्त्रों से ही लड़ा जाएगा।

पृष्ठ १७ का शेष

क्या इस प्रकार अविनाश का, मुन्नी का और मुन्नी के पति का भी जीवन नष्ट न हो जाएगा।'

'यह बात तो मैंने सोची ही नहीं थी।'

'लेकिन हमने तो यह बात सोची है क्योंकि मुन्नी को हमने बचपन से अपनी बेटी बनाकर पाला है—हम उसके दुःख सुख को भलि-भांति समझ सकते हैं। अगर मुन्नी अपने पति के घर में सुखी न रह सकी तो मेरा और मेरी पत्नी का सुख-चैन भी सदा के लिए समाप्त हो जायेगा।'

'लेकिन···इसका हल हो भी क्या सकता है ?'

'हल है···।'

'क्या ?'

'आप गाँव जाकर लड़के के घरवालों से बात कर लें।'

'क्या बात कर लूं ?'

'यही कि बाल-विवाह वास्तव में विवाह नहीं कहा जा सकता क्योंकि बचपन में लड़का और लड़की तो ब्याह का अर्थ और अभिप्राय ही नहीं समझते···सात फेरों का महत्व आठ नौ वर्ष के बच्चे क्या जान सकते हैं···उन्हें क्या ज्ञान हो सकता है कि पति-पत्नी का क्या-क्या कर्त्तव्य होता है।'

'यह तो आप ठीक कहते हैं सेठ साहब···मैं तो बचपन में ही इस शादी का विरोधी था।'

'बस तो आप लड़के वालों से बात कर लीजिए कि वह रस्मी ढंग से लड़की को तलाक दे दें···इसके बाद हम यहीं पर धूम-धाम से अविनाश और मुन्नी की शादी कर देंगे।'

'और अगर वह लोग न मानें तो ?'

'उनके न मानने का हल तो है हमारे पास।'

'क्या ?'

'अदालत···हम अपनी बेटी को न्याय द्वारा तलाक दिलवा सकते हैं।'

'ओह···!'

'वैसे भी अब मुन्नी व्यस्क है और बचपन की शादी को ठुकरा सकती है।'

'लेकिन क्या मुन्नी यह बात मान जायेगी ?'

'मैं इसीलिए तो आपके पास आया हूं···आप पहले तो मुन्नी को समझाइये। अगर मुन्नी यह बात मान जाये तो फिर हम लोग अपने आप ही सब कुछ ठीक कर लेंगे।'

'आप लोगों ने नहीं समझाया उसे ?'

'नहीं···अभी हमने उसे नहीं समझाया है···पहले यह काम आप कीजियेगा।'

'और अगर मुन्नी मेरी बात न मानी तो ?'

'इसका हल बाद में सोचेंगे···पहले आप मुन्नी को एक बार समझाने का प्रयत्न कर लें।'

'ठीक है···मैं जाता हूं···काश मुन्नी यह बात मान जाये तो उसका भविष्य भी बन जाए और अविनाश का जीवन भी नष्ट न हो।'

'जी··· बिल्कुल ··· आप प्रयत्न तो कीजिए।'

यशपाल धीरे-धीरे मुन्नी के कमरे के दरवाजे पर पहुंचे···फिर उन्होंने कुछ सोच कर क्षण-भर रुककर दरवाजे पर दस्तक दी। अंदर से आवाज आई—

'कौन ?'

'दरवाजा खोलो बेटी···।'

'ओह···मामाजी···।'

कदमों की चाप सुनाई दी और दरवाजा खुल गया। मुन्नी सामने ही खड़ी हुई थी। उसकी आंखें लाल अंगारा सी हो रही थीं जैसे वह बहुत अधिक रोई हो···आंखों के नीचे गड्ढे पड़ गए थे और पपोटे सूज गए थे। वह यशपाल के लिए रास्ता छोड़ते हुए बोली—

'आओ···!' यशपाल ने अन्दर आकर कहा, 'यह तूने अपनी हालत क्या बना रखी है···बिल्कुल मुर्दा-सी प्रतीत होती हो।'

'जी···कुछ नहीं मामा···मैं तो बिल्कुल ठीक हूं···आप टिकट ले आए ?

'हां बेटी···मैं टिकट ले आया हूं—सेठ साहब को भी बता दिया है कि कल सवेरे की गाड़ी से ही मैं यहां से रवाना हो जाऊंगा—परसों ही तेरे ससुराल वालों को तेरे जिंदा मिल जाने की खुशखबरी सुनाकर गौना की तिथि निश्चित करके सेठ साहब को सूचना दे दूंगा—वह लोग यहीं आकर गौना कराके ले जायेंगे।'

'ठीक है मामाजी···।' मुन्नी ने दुःखी स्वर में कहा।

'और हां बेटी···शायद फिर कभी तुझे साल दो साल में हफ्ता-पंद्रह दिन में एक बार वह लोग बम्बई आने दें।'

'मामाजी···वह मेरे पति हैं मेरे देवता हैं···मैं उनकी आज्ञा का ही पालन करूंगी।'

'मैं जानता हूं बेटी···पत्नी पति दासी ही होती है···तू यहां बंगले में रहती है···कारों में घूमती है···यह सब कुछ तुझसे सदा के लिए छूट जायेगा। हो सकता है गांव में रहकर तुझे चक्की भी चलानी पड़े, गोबर भी थापना पड़े। तुझे इन सब बातों के लिए तैयार होकर चलना पड़ेगा···तुझे यह भी भूल जाना पड़ेगा कि तूने शहर में रहकर कालिज में पढ़ा है और ऊँची सोसायटी में बैठी है।'

'मामाजी···मैं अपने पति के लिए सब कुछ करूंगी···आज तक मैं जिस प्रकार भी रही हूं वह सब कुछ भी मैं भूल जाऊंगी।'

'फिर तुझे यह भी भूल जाना पड़ेगा कि सेठ साहब और शोभना बहन ने तुझे कितने लाड़-प्यार और चाव से पाला है। वह चाहते थे कि तेरी शादी किसी ऐसे लड़के से हो जो उन्हों के पास रहे भी, क्योंकि वह दोनों तुझे बहुत ही प्यार करते हैं···वह तुझे एक मिनट के लिए भी दृष्टि से ओझल नहीं होने देना चाहते···तू सेठानी की बहुत सेवा करती थी ना···उनकी लाठी बनकर रहती थी···उनकी आंखें बनकर रहती थी···यह सब अब तुझको भूल जाना होगा।'

'मामा···!' पद्मिनी ने भारी आवाज में कहा, 'दुनिया में ऐसी कौन सी बेटी है जो जीवन भर माता-पिता के सीने से लगकर रहती हो ? हर लड़की को एक-न-एक दिन तो माता-पिता का घर छोड़कर पति के घर जाना ही पड़ता है और फिर यह पति की इच्छा पर है कि वह उसे कैसे रखे······ उसे माता-पिता के पास कब भेजे और कितने समय के लिए भेजे।'

'बेटी···!' यशपाल ने कुछ उदास स्वर में कहा, 'तेरा पति तुझे सेठ साहब और सेठानी जी से मिलने कभी-कभार हफ्ते-दस दिन के लिए भेज देगा लेकिन क्या वह तुझे अविनाश और उसकी मां से मिलने की आज्ञा भी देगा ?'

'मामाजी···!' पद्मिनी की आवाज कांप गई।

'हां बेटी···अगर कभी तेरे पति को यह बात मालूम हो गई कि तू अविनाश से बचपन से प्यार करती थी और अभी तक करती है तो उसके मन पर क्या बीतेगी ? दुनिया का कौन सा ऐसा पति है जो यह सहन कर ले कि उसकी पत्नी शादी से पहले किसी और से भी प्यार कर चुकी है···वह यह भी तो सोच सकता है कि उसकी पत्नी

होकर भी तू पहले प्रेमी से प्यार करती है।'

'मामाजी···आप कहना क्या चाहते हैं?'

'बेटी···मैं तो कुछ भी नहीं कहना चाहता···मुझे तो कुछ कहने का अधिकार ही नहीं है क्योंकि मैं ठहरा मूर्ख, देहाती, गंवार आदमी···तू फिर भी शहर की पढ़ी-लिखी समझदार लड़की है···लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि मुझे यह अनुभव है कि दिल पर लगने वाला प्यार का घाव आदमी की मौत के साथ ही मिटता है।'

'बस कीजिए मामाजी···भगवान के लिए बस कीजिए···।'

'मेरे कहने में हानि नहीं बेटी···मैं तेरा मामा हूं और तू जानती ही है कि मैं तुझे अपनी सगी बेटी जितना प्यार करता हूं। मैं तो तुझे उस भविष्य की तस्वीर दिखा रहा हूँ जो तुझे अपने पति के साथ गुजारना है···और साथ ही यह बताना चाहता हूँ कि तू चाहेगी तो भी अविनाश को नहीं भूल पायेगी···बचपन के वह सब खेल जो तू अविनाश के साथ खेल चुकी है सदैव तेरी आंखों के सामने घूमा करेंगे। तू यह कभी नहीं भूल सकेगी कि तूने अपने मन-मन्दिर में बचपन ही से अविनाश की मूर्ति एक देवता के समान सजा रखी थी···तू यह भी नहीं भूल सकेगी कि अविनाश ने भी तेरे ही लिए किसी और लड़की से शादी नहीं की थी···और तू यह कैसे भूल सकेगी कि अविनाश जिसने तेरे प्यार के लिए सुन्दर से सुन्दर लड़की को ठुकरा दिया उसी अविनाश को तूने लग्न-मंडप पर से उठा दिया···बस शादी से कुछ ही क्षण पहले यह जीवन भर का सम्बन्ध तोड़ लिया।

'और बेटी! तू कभी न भूल सकेगी कि तेरे ही प्यार की ज्वाला में जलकर अविनाश परीक्षा न दे सका···अपनी मां को अपने हाथ से पानी का गिलास तक न पिला सका···फिर एक दिन तू यह भी सुनेगी कि उसकी मां अपने पुत्र के हाथों से गंगाजल पिए बिना ही मर गई।'

'मामाजी···।' पद्मिनी का पूरा बदन थर-थर कांप रहा था।

'मुझे कहने दे बेटी···तू यह भी न भूल सकेगी कि अविनाश को तेरी ही याद में सुलग-सुलग कर टी० बी० हो जायेगी और वह किसी सैनेटोरियम में तेरा नाम ले-लेकर दम तोड़ देगा।'

'मामाजी···बस कीजिये मामाजी···।' पद्मिनी रोती हुई बोली, 'भगवान के लिए बस कीजिए···मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूं मामाजी···मुझे मेरे कर्तव्य से विचलित मत कीजिए।

'बेटी···यह तेरा कैसा कर्त्तव्य है जो इतने आदमियों का जीवन नष्ट करने पर तुझे विवश कर रहा है···तू जानती है तेरे सिवा अविनाश किसी और से शादी नहीं करेगा···उसकी मां इस दुःख में मर जायेगी और अविनाश तेरे ही प्यार में सुलग-सुलग कर क्षय रोग का शिकार हो जायेगा···तेरे ही लिए मैं कभी सुख की सांस न ले सकूंगा···तेरे ही लिए सेठ साहब और शोभना बहन दुःखी रहेंगे। हो सकता है कभी तेरे पति को तेरे और अविनाश के बीच की बात मालूम हो जाए तो भगवान जाने उसका व्यवहार तेरे प्रति कैसा हो? वह तुझे मार डाले या अविनाश ही के प्राण ले ले। क्या तेरा कर्त्तव्य यही सिखाता है कि तू अपने सीमित से कर्त्तव्य के लिए इतने लोगों का सुख-चैन लूट ले और वह भी उनका सुख-चैन जो तुझे इतना चाहते हैं···।'

'बस कीजिए मामाजी···!' पद्मिनी रोती हुई बोली,—'मैं कुछ नहीं जानती···मैं केवल यही जानती हूं कि मेरे माता-पिता ने जिसके साथ भी विधिवत् धर्मानुसार मेरे फेरे करा दिए हैं वही मेरा पति है···मेरे मन-मन्दिर का देवता है···और अब किसी और प्यार के लिए सोचना मेरे लिए पाप है।'

'हूं···!' यशपाल ने एक लम्बी और गहरी सांस ली, 'तो यह तेरा आखिरी फैसला है।'

'हां मामाजी···।'

'और इस फैसले को तू किसी हाल में भी नहीं बदलेगी?'

'नहीं···मामाजी।' पद्मिनी ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

'ठीक है···अब तेरी इच्छा।' यशपाल ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'मैं तो जो कुछ तुझे समझा रहा था वह तेरी और तुझसे सम्बन्धित तेरे प्रियजनों की भलाई के लिए ही समझा रहा था···अब तेरी समझ में न आए तो मैं क्या कर सकता हूं।'

यशपाल ने ठंडी सांस ली और वह बाहर जाने के लिए मुड़े ही थे कि दरवाजे के पास सेठ साहब और शोभना खड़े दिखाई दिए। यशपाल ठिठककर रुक गए। पद्मिनी ने जल्दी से अपने आंसू पोंछ लिए और शोभना की ओर बढ़ती हुई बोली—

'अरे डैडी···आप कब आ गए···मां को लेकर?'

'थोड़ी ही देर हुई है बेटी।'

पद्मिनी शोभना की छड़ी लेने लगी तो शोभना बोली—

'रहने दे बेटी···तू अब इस छड़ी को लेकर क्या करेगी?'

'मां···।'

'और क्या बेटी···अब तो तू ससुराल चली जायेगी और वह भी ऐसी जगह जहां से बरसों बाद तेरा आना हुआ करेगा···तेरे पीछे तो मुझे इसी छड़ी के सहारे चलना होगा।'

'मगर मां···अभी तो मैं यहां हूँ।'

'कितने दिनों के लिए···दो-चार दिन न सही एक हफ्ते बाद ही सही···आखिर तुझे जाना तो है ही···फिर मैं अभी से बिना तेरे सहारे चलने की आदत क्यों न डालूं।'

'नहीं मां···मैं तुम्हारे पास से तब जाऊंगी जब तुम्हारी आंखों की पट्टी खुल जायेगी और तुम स्वयं अपनी आंखों से देखकर चलने लगोगी।'

'लेकिन, मैं उस समय तक पट्टी खुलवाऊंगी ही नहीं जब तक तेरा गौना नहीं हो जाता।'

'मां···!' पद्मिनी की आवाज कंप-कंपा गई।

'और क्या बेटी···क्या करूंगी मैं उन आंखों से पट्टी खुलवाकर जिनसे मैं अपनी बेटी को ही न देख सकूंगी?'

'मां! यह तुम क्या कह रही हो?'

'वही कह रही हूं बेटी, जो मुझे करना है।' शोभना ने भारी आवाज से कहा, 'अब तो मुझे इसी छड़ी का सहारा लेना है इसलिए तेरा सहारा भूल जाना होगा···तेरे जाने से पहले मैं आंखों की पट्टी खुलवा लूंगी तो फिर तेरे जाने के बाद न जाने मेरे दिल पर क्या-क्या गुजरेगी।'

'बेटी···।' सेठ साहब भारी आवाज में बोले, 'क्या तू सचमुच हमें हमेशा के लिए छोड़कर इस घर से चली जायेगी?'

'डैडी···'

शेष आगामी अंक में

हिमांशु जोशी

बात पुराने समय की है। चींटियां तब बहुत बड़ी-बड़ी हुआ करती थीं। लम्बी भी, चौड़ी भी, और खूब मोटी भी—करीब-करीब मेंढक के बराबर।

एक बार की घटना है, कहीं घना जंगल था एक। वहां कुछ चोर छिपकर रहते थे। उन्हीं के साथ छिप कर कुछ चींटियां भी रहती थीं। एक दिन चोरों से कुछ लापरवाही हो गई। न जाने कैसे, उनकी फूस की झोंपड़ी जल गई। सारा सामान जल गया। सारी चीजें खत्म हो गयीं; तब मजबूर होकर उन्हें कहीं दूर निकल भागना पड़ा।

पर चींटियां अब परेशान थीं। सोचने लगीं कि वे किधर जायें? क्या करें। अब तक तो वे आराम से रहीं। खाने की चिन्ता नहीं। पीने की फिक्र नहीं। चोर सामान चुराकर लाते, उसी में से वे भी चुरा लेतीं। खूब मुफ्त का माल मिल जाता। पर अब क्या हो?

काम करना उन्होंने सीखा नहीं। चोरों के साथ रहीं, इसीलिए चोरी की आदत भी पड़ गई। मेहनत करना वे जानती नहीं थीं। पर अब क्या करें? इसी सोच-विचार में बहुत दिन बीत गए। आलसी चींटियां धूप में पड़ी भूखी मरने लगीं।

एक दिन उन्होंने देखा, कि पास ही झाड़ी में एक बूढ़ा खरगोश गहरी नींद में सो रहा है। आराम से जोर-जोर के खर्राटे भर रहा है। वे सब चींटियां चुपके-चुपके उसके पास पहुंचीं। सभी ने उसे घेर लिया. और फिर एक भूखे शेर की तरह उस पर टूट पड़ीं।

बूढ़ा खरगोश घबराता हुआ जागा। आंखें खोलीं। इधर-उधर देखा, बड़ी-बड़ी डरावनी चींटियां उस पर झपटी हैं। उसका खून चूस रही हैं और मांस नोच-नोचकर खाये जा रही हैं। बेचारा खरगोश दर्द से कराहने लगा। जोर-जोर से रोने लगा, पर उसकी सुनता कौन?

अन्त में उसे एक उपाय सूझा। उसने चींटियों से कहा—"तुम भी कितनी मूर्ख हो! मुझे खाना ही है, तो आराम से खाओ। खुली जगह में रख दो: सब मौज से बैठो; और फिर मुझे खा डालो। ऐसे तुम्हें कितनी परेशानी हो रही है। बेकार में कष्ट उठाना अच्छी बात नहीं।"

मूर्ख चींटियों के दिमाग में बात बैठ गई। खरगोश को सबने मिलकर उठाया और खुले मैदान में जाकर पटक दिया। पर खरगोश गिरते ही झटके के साथ उठ बैठा और छलांग मारकर दूर एक पत्थर पर जा बैठा। फिर हंसता हुआ पूछ हिलाकर बोला—"बोलो, अब भी क्या मुझे खाना चाहती हो?" उसने चींटियों की ओर देखा।

चींटियां आश्चर्य से देखती रह गयीं। हाथ मलती हुई गुस्से से बोलीं—'हां, हम तुम्हें खाना चाहती हैं। तुमने हमें धोखा दिया है। वह ठीक नहीं।

खरगोश कुछ सोचता हुआ बोला—"ठीक है। मैंने तुम्हें वचन दिया था। मैं हमेशा उसके लिए तैयार हूँ। पर मेरी एक शर्त है। वह शर्त तुम्हें भी मंजूर करनी होगी।"

"वह क्या है?" चींटियों ने पूछा।

खरगोश बोला—"मैं अब बहुत दुबला पतला हो गया हूं। मुझे खाने से तुम्हारा पेट किसी हालत में नहीं भर सकेगा। इसलिए मुझे कुछ दिन और जंगल में रहने दो। जब में मोटा हो जाऊँगा तो तुम मुझे ठीक से खा लेना।"

"तुम्हें मोटा होने में कितना समय लगेगा?" चींटियों ने पूछा।

बूढ़े खरगोश से उत्तर दिया—"यह मैं नहीं बतला सकता कि कितना समय लगेगा। लेकिन इतना निश्चित है कि जब मोटा हो जाऊँगा, तब मेरे सींग भी निकल आयेंगे, मेरे सिर पर लम्बे-लम्बे सींगों को देख कर तुम अनुमान लगा लेना, कि अब मैं मोटा हो गया हूं। इसलिए तब तुम मुझे खा सकती हो। मैं कुछ भी न कहूंगा।"

"वह कब होगा?" चींटियों ने बड़े दु:ख के साथ पूछा।

'जब तुम्हारे पंख लग जायग।' इतना कहकर खरगोश ने फिर एक छलांग मारी। तेजी से झाड़ियों की ओर भागा और ओझल हो गया।

आलसी चींटियां लार टपकाती रह गयीं। अपना सा मुंह लेकर अब वे बैठी-बैठी सोचने लगीं, खरगोश मोटा होगा। उसके सींग जमेंगे। हमारे पंख लगेंगे, और तब उसे हम आराम से बैठकर खायेंगी।

हाथ पर हाथ रखकर वे इन्तजारी में बैठ गयीं और बैठी रहीं।

शेर, गीदड़, लोमड़ी, चूहा, हाथी जो कोई भी जानवर वहां से गुजरता, उसी को रोककर पूछतीं—"भई, तुमने उस बूढ़े खरगोश को तो नहीं देखा? अब वह मोटा हो गया होगा। उसके लम्बे-लम्बे सींग भी जम गए होंगे। अब हमें उसे खाना है। उसने वचन जो दिया था।"

जो कोई भी उनकी ये मूर्खतापूर्ण बातें सुनता, हंसता और चुपचाप चला जाता।

इसी तरह दिन बीते, महीने बीते। बरसों बीत चले। पर वह खरगोश उन्हें दिखाई न दिया। चींटियां भूखी बैठी-बैठी सूख गयीं। कहां पहले वे मेंढ़क के बराबर थीं, और कहां अब दुबली होते-होते जौ के दाने से भी छोटी रह गयीं। पर उन आलसियों ने कभी भी हाथ पांव न हिलाया। भोजन ढूंढ़ने की कुछ भी कोशिश न की। हाथ पर हाथ धरे बैठी रहीं, कि कब खरगोश आएगा, और कब उसे हम आराम से भर पेट खायेंगी।

अब उन नन्हीं-नन्हीं दुबली-पतली चींटियों के पंख भी निकल आये। वे कुछ-कुछ हवा में उड़ने भी लगीं। तभी एक दिन उन्होंने देखा, कि वही बूढ़ा खरगोश एक ऊँचे टीले पर बैठा है, और उनकी ओर देखकर जोर-जोर से हंस रहा है।

चींटियां उसे घेर कर झटपट खड़ी हो गयीं। गुस्से से आंखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर बढ़ीं, पर वह जोर-जोर से हंसता रहा। फिर बोला, 'देखो अभी भी मेरे सींग उग

सवाल
यह है ?
क्या किसी दूसरे उपग्रह पर आबादी है ? यह देखने के लिये हमारे दो वैज्ञानिक चाँद से भी आगे बहुत दूर एक उपग्रह पर पहुंचे हुए हैं ।

क्या कहा, तुम्हारी गाड़ी का बस ढांचा ही रह गया है, बाकी कुछ नहीं बचा ? पर इससे यह कहां सिद्ध होता है कि वहां आबादी है ?
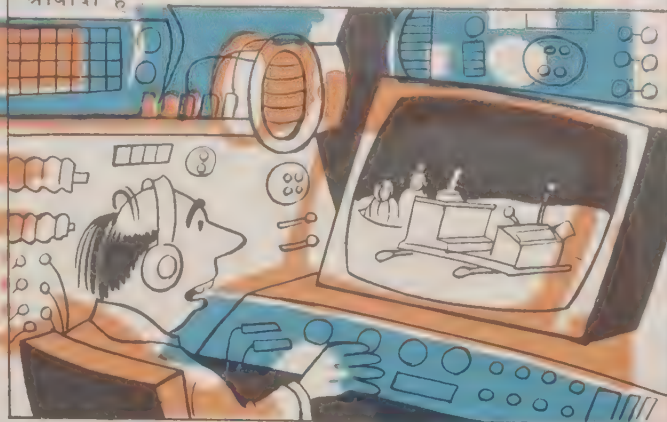
यह तो सिद्ध नहीं होता ।
पर यह चि···चि···चि···चिह ! पांव के चि···चि···चि !

क्या चि चि पांव लगा रखी है ? क्या हो गया है तुम्हारे पांव को ? ग्रेवेटि कम होने के कारण वहां तुम्हें अपना वजन कम लगता है तो जमा-जमा कर सावधानी से आगे पांव रखो । सुन लिया ना । पांव जमा-जमा कर रखो ।

हैलो, हैलो ! पांव जमा कर रखा है ना ?
कुछ पता चला वहां आबादी है या नहीं ।

पृष्ठ ३२ का शेष भाग

नहीं पाये। इसलिए अभागी चींटियों, तुम अभी भी मुझे खा नहीं सकोगी।"

चींटियों ने देखा, कि वाकई अभी खरगोश के सींग उग नहीं पाए। उन्हें बड़ी निराशा हुई।

'तुम बेहद आलसी हो, मूर्ख हो। तुम्हारे पंख जम गए, पर अभी तक भी तुम्हें अक्ल नहीं आयी।" खरगोश कुछ क्रोधित होकर बोला—'पहले तुम यह बतलाओ कि तुम में यह किसका असर है। तुमने दूसरों का खून पीना सीखा। मुफ्त का खाना सीखा। काम करने से जी चुराना सीखा। दूसरों को धोखा देना सीखा।" खरगोश एक के बाद एक सवाल पूछता चला गया।

चींटियों ने उत्तर दिया, "हम कुछ समय तक एक ऐसे घर में रहीं, जहां कुछ आदमी रहते थे। उनके ही गुणों का हम पर असर हो सकता है।"

"तभी तुम एकदम मूर्ख हो।" खरगोश बोला।

"वह कैसे?" चींटियों ने पूछा।

इस तरह कि, जो मूर्ख होते हैं, आलसी होते हैं, वे किसी के अच्छे गुण नहीं सीखते; बल्कि दुर्गुण ही अपनाते हैं। वैसा हो ठीक तुमने भी किया।" खरगोश ने उत्तर दिया।

चींटियां सोचती रहीं।

खरगोश फिर बोला, "देखो, तुमने कभी सोचा, कि आदमी में कुछ अच्छाइयां भी होतीं हैं। कभी तुमने उन्हें अपनाने का विचार किया?"

"नहीं, हमने नहीं सोचा।" चींटियां बोलीं।

"तभी तो तुम्हारी यह हालत हुई।" खरगोश कहता चला गया, "देखो, बुरे गुण नहीं। समझदार लोग दूसरों के अच्छे गुण ही अपनाते हैं। इसलिए तुम्हें भी अब आदमियों के अच्छे गुण अपनाने चाहियें और बुरों को छोड़ देना चाहिए।"

"वह कैसे होगा?" चींटियों ने पूछा।

खरगोश कहने लगा, आदमी बुरे ही नहीं, अच्छे भी होते हैं। उसमें बुराइयां ही नहीं, अच्छाइयां भी होती हैं। भले आदमी तुम्हारी या भेड़-बकरियों की तरह नहीं रहते। वे घर बनाकर रहते हैं। खूब मेहनत किया करते हैं। नियम से उनके सारे काम होते हैं। आपस में वे प्रेम से रहते हैं। बांटकर खाते हैं। तुम्हें भी अब उनके ये गुण अपनाने चाहिएं। जिस दिन तुम इन अच्छे गुणों को अपना लोगी, उस दिन तुम्हें फिर मुझे खाने की जरूरत न होगी। अगर तुममें अच्छाई आ गयी, तो समझ लेना कि बूढ़े खरगोश के सींग जम गए।"

इतना कहकर खरगोश झाड़ियों में चला गया और ओझल हो गया।

चींटियों ने मिलकर इस बात पर विचार किया, और अन्त में तय किया कि वे इस पर अमल करेंगी।

और उसी दिन से चींटियों में एक नई जिन्दगी शुरू हो गयी।

आज चींटियां आदमियों की तरह घर बनाकर रहती हैं। अपने बड़ों की वे आज्ञा मानती हैं। आपस में झगडती नहीं, खूब प्रेम से रहती हैं। मिलकर काम करना उन्हें बड़ा अच्छा लगता है। बांटकर के खाना खाती हैं। उन्होंने मेहनत करके खाना शुरू कर दिया है। इसलिए वे आदमियों से भी सुख से, शान्ति से रहती हैं। आदमियों की तरह वे भी अपनी गाय-भैंस पालती हैं। जरूरत के लिए अपना अन्न भंडार रखती हैं। मनुष्यों से भी अच्छी तरह से रहना उन्होंने सीख लिया है। उनका आकार भी छोटा ही है, पर वे उसी से खुश हैं, क्योंकि वे समझदार हैं। जानती हैं कि कोई भी प्राणी आकार से नहीं, विचारों से बड़ा होता है।

वे इसलिए अब सुखी हैं, कि उन्होंने दूसरों के दुर्गुण नहीं, गुण अपनाए।

●

सरकारी सम्पत्ति

वह सरकारी आदमी
आया शहर में जब से,
एक आम आदमी
देखता रोजाना
उसकी हरकतें तब से।
जब बात सीमा से बढ़ गई,
तब एक दिन आम आदमी ने
सरकारी आदमी को
आम राह पर रोका,
'अफसरी' मूड को टोका,
'सा...ब' आप ये सब क्या करते हैं?
आफिस की शोभा
बंगले में भरते हैं!
लेकिन सरकारी आदमी
उसी मुद्रा में बोला—
'ए, मिस्टर
सरकारी संपत्ति अपनी संपत्ति है—
आपको क्या आपत्ति है!"

—नारायण श्रीवास्तव

करतूत

—रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

यदि
पड़ोसी का मुर्गा
दिन में बोले
तो यह पक्का सबूत है,
कि वह
परखनली की करतूत है।

शुभंशीघ्रम्

—आजाद रामपुरी

दूसरी आजादी के मंथन से—
उद्भूत,
सुविधाओं की उपलब्धियों का,
शीघ्र से शीघ्र हो उपयोग!
बस यही सोचकर,
सत्ता के भोपा,
सारे प्रसाद का—
लगा रहे हैं भोग॥

टेन्डर नोटिस

चुन्नीलाल सलूजा

इस साल आने वाली बाढ़ के कारण
निचले हिस्सों में भरेगा पानी
मंत्री जी हवाई सर्वेक्षण करेंगे
और बनेंगे दानी
बाढ़ में फसें लोगों के लिये
खाने के सवा लाख पैकेट गिरायेंगे
खाने के इन पैकेटों के संभरण के लिये
टेन्डर मांगें जाते हैं
माल तैयार रखने के लिये निर्देश
अभी से दिये जाते हैं।

साध्य

एक कवि
जब अपनी कविताओं में,
नई-नई कल्पनाओं के बीज,
नहीं बो सके!
वे,
चोटी के कवि नहीं हो सकें,
तब वे,
नई सम्भावनाओं की ओर,
बढ़ने लगे!
कविता को छोड़,
हिमालय की चोटी पर,
चढ़ने लगे।

—आजाद रामपुरी

नजर
के
नजारे

अपने कोट पर खुद नजर रखें
चलो अब इस होटल में आराम से खाना खाया जाये!

अजीब होटल है, यहां ग्राहक को खुद अपने कोट पर नज़र रखनी पड़ती है।
अपने कोट पर खुद नजर रखें

अपने कोट पर खुद नजर रखें
ऐसी नज़र रखूंगा कि हटाऊंगा ही नहीं।

अपने कोट पर खुद नजर रखें
मैं टकटकी बांधे देख रहा हूं, कोट की ओर।

अपने कोट पर खुद नजर रखें
मैंने एक पल के लिये भी अपनी नज़र कोट पर से नहीं हटाई।

अपने कोट पर खुद नजर रखें
अब चलना चाहिये.

अपने कोट पर खुद नजर रखें
हैं...... कोट पर नजर रखने का यह मतलब था?
अजय '80

कौन सी किताब पढ़ें ?

जब कोई किताब पढ़ने के लिए खरीदनी होती है तो प्रायः लोग असमंजस में पड़ जाते हैं कि कौन सी किताब लें। हम कुछ दीवाने सुझाव पेश करते हैं कि किस समय कौन सी पुस्तक पढ़ने का उपयुक्त समय होता है ताकि आगे से आपको परेशानी पेश न हो।

जब आपका लड़का क्रिकेट की गेंद व बल्ला खरीद लाये तो आप 'घरेलू कार्पेन्टर शिक्षा' खरीद कर पढ़ें। खिड़कियों के टूटे शीशे आदि लगाने में सहायता मिलेगी।
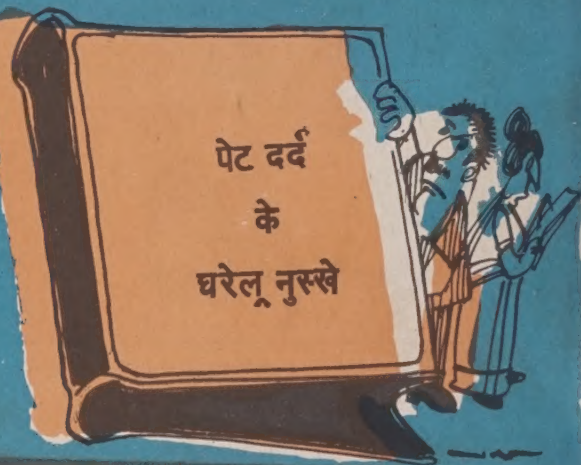
जब आप की पत्नी क्या पाक शास्त्र यानि कुछ बुक खरीद लाये तो आप यह पुस्तक लाकर पढ़ें। नये नये डिशों की ट्राई से आपका पेट जरूर दुखेगा

जब दूसरे शहर से मेहमान आने वाले हों तो इसे पढ़िये। आप मेहमानों को घटिया चुटकुले सुना २ कर ऐसे बोर कर सकेंगे कि वह जल्दी ही अपना बोरिया बिस्तर गोल कर लेंगे।

यदि आप कम्पनी या सरकारी खर्चे पर यात्रा पर जाते हुये पुस्तक पढ़ना चाहते है तो उधार की पुस्तक लें विषय चाहे कुछ भी हो यात्रा भी मुफ्त की, तो पुस्तक भी मुफ्त की।

यदि आपकी सास का पत्र आ गया है कि वह आ रही हैं तो खूंखार जानवरों से मुठभेड़ के दास्तान पढ़ें और इस प्रकार स्वयं को मानसिक रूप से सास का सामना करने के लिए तैयार कर पायेंगे।

आप हिल स्टेशन पर हैं तो तेल संकट या मुद्रास्फीति विषयक पुस्तकें पढ़ें। संसार में आने वाली भयानक आर्थिक संकटों की कल्पना में आप डूब जायेंगे और हिल स्टेशन वालों के बिल चुकता करते समय उतना कष्ट नहीं होगा।
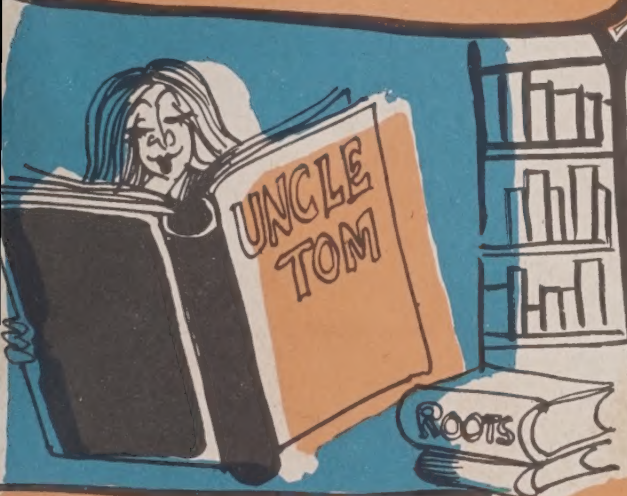
ापकी शादी होने वाली है तो गुलामों वाली पुस्तकें ढ़ें। आपको भी जल्द ही एक गुलाम मिलने वाला है। अमरीकी गुलामों की कहानियां ठीक रहेंगी।

आपके बच्चे पॉप म्यूजिक का नया एलबम लाये हैं तो आप हट्ठयोग की पुस्तक पढ़ें। हो सकता है पुस्तक पढ़ कर अभ्यास कर आप समाधि लगाने लग जायें। फिर पॉप म्यूजिक कितना ही शोर करे आप आराम से समाधि लगाकर बेखबर बैठे रहें।

बीबी मायके जाये तो आप आजादी विषय की पुस्तकें ले कर पढ़ें और अपने दिल को आजादी की लहर के साथ ल्पना कर लें तभी बीबी की अनुपस्थिति का सुख आप सच्ची तरह भोग सकेंगे।

आपने परीक्षा दे रखी हो और रिजल्ट आने में देर हो तो इस बीच आप दुखान्त नावल पढ़ें ताकि आपको पता लगे, जीवन में फेल होने से भी बड़ी ट्रेजेडियां होती हैं।

मनमिन्द्र सिंह—करनाल : गरीबचन्द जी अगर आप टाई और चश्मा पहन कर पत्रों का जवाब दें तो आप ज्यादा सुन्दर लगेंगे।

उ० : अगर टाई और चश्मा पहन मैं पत्रों के जवाब देने लगा तो आप दीवाना पढ़ना भूल जायेंगे। इससे हम्हीको नुकसान होगा।

सुरेशकुमार नामदेव—पिपरिया : गरीबचन्द जी सारे विश्व की खाद्य पदार्थ (अनाजों) की समस्या का श्रेय आपको है क्या ?

उ० : इसका पूरा श्रेय मुझे बदकिस्मति से नहीं मिला क्योंकि खाद्य समस्या तो मनुष्य चूहों की तरह बच्चे पैदा कर खुद भी बढ़ा रहा।

प्रेमनारायण शर्मा—चित्तौड़ गढ़ : गरीबचन्द जी, 'इन्सान को उसकी गलती का कब एहसास होता है।"

उ० : जब गलती के फलस्वरूप जुर्माना भरना पड़ता है। पैसों की जुदाई बड़े-बड़े सबक सिखाती है।

नरेश गुलाटी, दीपिका—तिलकनगर : गरीब. चन्द जी आपको खत डाले अनेक, जवाब न मिला एक ?

उ० : एक ! (मिल गया आपका मुंह मांगा जवाब ?)

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : आपकी बिरादरी वाले मरने के बाद कहां जाते हैं ?

उ० : यमराज व धर्मराज में से जिसका इन्वीटेशन कार्ड पहले मिलता है उसी के दरबार की शान बढ़ाने चले जाते हैं।

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीरजी : डीयर गरीब चन्द जी, ये अमीर गरीब का भेद कब खत्म हो सकता हो ?

उ० : जब आप चूहे की योनि में आयेंगे। हम गरीब अमीर दोनों का माल बिना भेद-भाव के कुतर जाते हैं।

*समाजवाद का आइडिया वास्तव में काली मार्क्स को चावल में चूहों की बीट देखकर ही आया था।

लखमी चन्द माधवानी—मैहर : आपके बिरादरी वाले आपका पता पूछते हैं, आप बतायें हम आपके बिरादरी वालों को बता देंगे।

उ० : आप उन चूहों के मुंह न लगिये किसी दिन मूंछे कुतर जायेंगे। मेरे बिल व टेली-ोन का नम्बर गुप्त है।

गुप्ता और तिलकराज—खुरजा : ारीब चन्द जी, शीघ्र ही दिल्ली में

आपकी बिरादरी को खत्म करने का अभियान शुरू होने वाला है, तो आप हमारे यहां क्यों नहीं आ जाते ?

उ० : बड़े-बड़े आये खत्म करने वाले और किस्सा कुर्सी का बना कर मुंह लटका कर चल दिये। हम बने रहे और बने रहेंगे। हम तो सरकार से कहते हैं भाई, आप लोगों ने खामाखांह शेर को अपना राष्ट्रीय पशु बना लिया। उसको समाप्त होने से बचाने के लिए लाखों रुपये खर्च कर रहे हो। हमें बनाओं अपना राष्ट्रीय पशु, तुम्हारा धेला भी खर्च नहीं होगा। हम अपनी हिफाजत खुद कर सकते हैं।

करनाल-एम-एम—गुजराल : गरीब चन्द जी. अगर आपकी संसार के मशहूर बॉक्सर मोहम्मद अली से बॉक्सिंग करवाई जाये तो आप जीतोगे या मोहम्द अली।

उ० : हार ीत का फैसला तो बाक्सिंग रिंग में ही होगा। लेकिन इतना यकीन मुझे है कि आप अली को मुझसे लड़ने के लिये तैयार नहीं कर पाओगे। दस-बीस करोड़ रुपये से कम की रकम दिखाये बगैर वह लड़ता ही नहीं।

प्रेम बाबू शर्मा—दिल्ली : गरीब चन्द जी, आदमी को सफलता कैसी मिलती है ?

उ० : तिकड़म लड़ा कर।

गुरुदास मोरुमल आर्य—जलगांव : गरीब चन्द, आप इतने सवालों का जवाब देते हो हर एक को, अगर आप कभी नदी में कूदने गये और आपने चिल्लाया तो क्या कोई आप को बचाने के लिए आयेगा ?

उ० : दिल्ली में जमुना का पानी इतना गंदा हो गया है कि मैं डूब ही नहीं पाऊंगा। ऊपर तैरता रहूंगा। खुदा बनाये रखे फैक्ट्री वालों को।

एस०. एन· मिश्रा—बिलासपुर : मेरे परम प्रिय गरीबचन्द जी, यदि कोई लड़की पहली मुलाकात में ही तकरार की बातें करे। और लड़का उसे पाना चाहता है। तब ऐसे समय में क्या करना चाहिए।

उ० : ऐसे समय में लड़के को डाक्टर से अपने दिमाग की जांच करा लेनी चाहिए पहली मुलाकात में ही जो तकरार करे वह मिलने व शादी के बाद तो महाभारत से कम क्या ही करेगी।

प्रेमनारायण शर्मा—राजस्थान : गरीब चन्द जी, 'आप मेरे पास नौकरी कर लो, अमीर चन्द बना दूंगा।"

उ० : अमीर चन्द तो मैं अखबार में १५ रु० का नाम बदलने की विज्ञापन छाप कर भी बन सकता हूं। असली काम की बात तो बताई ही नहीं नौकरी के लिए मुझे पक्का माल क्या मिलेगा ?

केवल प्रकाश—काशीपुर : मनुष्य को कोई तकलीफ हो, बीमार हो तो डाक्टर से दवा लेकर ठीक हो जाता है पर बेचारे मूक जानवरों का कष्ट कौन दूर करता होगा।

उ० : आप बेकार की चिन्ता में पड़े हैं। अव्वल तो मूक जानवरों को कष्ट होता ही नहीं। होता भी है तो वह अपना इलाज खुद कर लेते हैं। आप जरा अपने काशीपुर की झुग्गियों में जाकर आदमियों का कष्ट देखें और उनकी चिन्ता करें। मेरी खड़ी पूंछ इसी बात का प्रतीक है कि हमें कष्ट नहीं है।

सुधीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरनगर (बिहार) : बल्ब जलता है तो लाइट होती है दिल जलता है तो ?

उ० : दिमाग का फ्यूज उड़ जाता है।

सतीन्द्र सिंह साहनी—सुभाष नगर, बरेली : गरीबचन्द जी, यदि सरदारजी की पत्नि सरदानी और पंडित जी की पत्नी पंडितानी तो शायर जी की पत्नी ?

उ० : शेरनी। शायर फक्कड़ होते हैं और बीबी उन्हें फाड़ खाने के लिये तैयार बैठी रहती हैं।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२